0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि. ४५३

॥ श्रीः ॥

स्वधर्मधुरन्धर दैवज्ञवाचस्पति

ज्योतिष्पारदृश्वा

श्री ६ पूज्य

विनायक शास्त्रीजी वेताल का जीवनचरित्र.

श्रीकाशीनिवासी-ज्यौतिषशास्त्रविद्

श्रीनाथ शास्त्री वेताल

रचित

और

साहित्यशास्त्रविद्

...ाम शास्त्री वेताल

...प्रकाशित

...न मुद्रित

... महोत्सवे

संवत् ...९८१

प्रथमवार १०००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नं० ४-८०१ दि॰ ४५८

प्रकाशक के दो शब्द.

मेरे पूज्य बन्धुवर पं० श्रीनाथ शास्त्रीजी ने कै० पूज्यपाद श्री ६ पिताजी का जीवनचरित्र लिखकर इसके प्रकाशन की मुझे आज्ञा दी। मुझ ऐसे मन्दबुद्धि वाले विशेषतः हिन्दी भाषा से बिलकुल अनभिज्ञ जन को ऐसे महत्त्व का कार्य सौंप कर पूज्यवर ने मेरा गौरव किया इसलिये मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूं। अपना असामर्थ्य समझकर भी केवल उनके प्रोत्साहन से मैंने यह कार्य उठाया। आज बडे सन्तोष का विषय है कि भगवान् श्रीविश्वनाथजी की असीम कृपा से यह प्रकाशन कार्य पूर्ण हुआ।

संभव है कि इसमें मेरे बुद्धिमान्द्य से असावधानता से वा दृष्टि दोष से अनेक दोष रह गये हों। सहृदय पाठकों से सविनय तथा सादर यही निवेदन है कि इसके दोषों की उपेक्षा कर हंस क्षीर न्याय से इसमें जो कुछ थोडे से गुण हों उनका ग्रहण करें और आद्यन्त इस चरित्र को पढ़कर ग्रन्थकर्ता के और मेरे परिश्रम को सफल करें। इति शुभम्।

मूल्यम् ।।–

श्री रथयात्रा
संवत् १९८१
ता० ४-७-२४

विनीत
अनन्तराम शास्त्री वेताल
काशी.

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ श्रीः ॥

उपहार.

श्रीयुत ______________________

____

______________ महोदय.

कै०, पूज्यपाद श्री ६ पिताजी के इस संक्षिप्त जीवनचरित्र को सहृदय तथा गुणग्राही श्रीमान् के करकमलों में सादर उपहार करता हूं । और आशा रखता हूं कि श्रीमान् इसका सप्रेम स्वीकार कर मुझे अनुगृहीत करेंगे ।

....

संवत् १९   भवदीय

ताः । । ई.   श्रीनाथ शास्त्री 'वेताल

काशी.

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

नं० ४८०१

श्री ५ को सरकार

श्री ५ को सरकार

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्रीमान् वेदसंरक्षक राजासाहब
मुनशी माधवलालजी सी. एस. आई. काशी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

समर्पण.

श्री काशीजी के प्रधान रईस हमारे आश्रयदाता [illegible] तथा विद्यानुरक्त श्रीमान् वेदसंरक्षक राजासाहब मुनशी माधवलालजी सी. एस. आई महोदय इससमय सुवर्णमयी पृथ्वी पर रत्न के समान शोभा देते हुए विराजमान हैं। ग्रन्थ लेखक का कर्तव्य है कि अपने ग्रन्थ को किसी योग्य पात्र में अवश्य समर्पण करे जिससे ग्रन्थ तथा लेखक दोनों सुशोभित होकर निर्मल कीर्तिलाभ के भागी होते हैं। इस नियम के अनुसार इससमय श्रीकाशीनिवासी कैलासवासी पूज्यपाद श्री ६ पिताजी के इस जीवनचरित्ररूप ग्रन्थ के लिये सर्वथा मुझे श्रीमान् ही योग्यपात्र दृष्टिगत होते हैं। अतएव इस जीवनचरित्र को श्रीमान् के करकमलों में सादर सविनय समर्पण करके मैं कृतकृत्य होता हूं।

[illegible]

भवदीय विनीत शुभचिन्तक
श्रीनाथ शास्त्री वेताल
काशी.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्रीमान् वेदसंरक्षक राजासाहब

मुनशी माधवलालजी सी. एस. आई. काशी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ श्रीः ॥

समर्पण.

श्री काशीजी के प्रधान रईस हमारे आश्रयदाता वयोवृद्ध तपोवृद्ध तथा विद्यावृद्ध श्रीमान् वेदसंरक्षक राजासाहब **मुनशी माधवलालजी** सी. एस. आई महोदय इससमय सुवर्णमयी पृथ्वी पर रत्न के समान शोभा देते हुए विराजमान हैं। ग्रन्थ लेखक का कर्तव्य है कि अपने ग्रन्थ को किसी योग्य पात्र में अवश्य समर्पण करे जिससे ग्रन्थ तथा लेखक दोनों सुशोभित होकर निर्मल कीर्तिलाभ के भागी होते हैं। इस नियम के अनुसार इससमय श्रीकाशीनिवासी कैलासवासी पूज्यपाद श्री ६ पिताजी के इस जीवनचरित्ररूप ग्रन्थ के लिये सर्वरीत्या मुझे श्रीमान् ही योग्यपात्र दृष्टिगत होते हैं। अतएव इस जीवनचरित्र को श्रीमान् के करकमलों में सादर सप्रेम सविनय समर्पण करके मैं कृतकृत्य होता हूं।

श्री रथयात्रा
संवत् १९८१
ताः ४-७-२४

भवदीय विनीत शुभचिन्तक
श्रीनाथ शास्त्री वेताल
काशी.

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नं० ४८०१

भूमिका.

समस्त संसार में महानुभाव पुरुषों का जीवनचरित्र लिखने की जो परिपाटी प्रचलित है उसका मुख्य उद्देश्य यह है कि उन महानुभावों के चरित्र का ज्ञान होकर तदनुकूल वर्तन करने की लोगों में अभिरुचि उत्पन्न हो। जिससे लोगों की अनायास से उन्नति हो सकती है। इसके अतिरिक्त मेरा अभिप्राय यह भी था कि अपने पूज्य पिताजी का यथार्थ जीवनचरित्ररूप गुणानुवर्णन करना अपना ही कर्तव्य है। उससे विमुख होना मानो अपने कर्तव्य से च्युत होना है। कारण कि पूज्य पिताजी के जीवन के बहुत कुछ अंशों का जितना मैं जानकार हूं उतना दूसरों का होना असम्भव है। इसका तत्व यह है कि प्रायः पूज्य पिताजी की सेवा में ही सर्वदा मेरा समय बीता हुआ है। इसलिये मैं अपनी सज्ञानावस्था से पूज्य पिताजी के चरित्र का पूर्णतया जानकार हूं। उसके पूर्व का चरित्र पूज्य पिताजी की विद्यमानावस्था में समय २ पर बहुत कुछ उन्हीं के मुखारविन्दसे सुनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। और अवशिष्ट भाग प्राचीन आप्त वृद्ध पुरुषों के मुख से सुना है। एवं च सम्पूर्ण चरित्र मुझे अवगत हुआ। उससमय सहसा मेरे हृदय में यह प्रबल इच्छा हुई कि कै० पू० पितृपाद स्वधर्मधुरन्धर दैवज्ञवाचस्पति–ज्योतिष्पारदृश्वा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्री ६ विनायकशास्त्रीजी वेताल महोदय का जीवनचरित्र मैं लिखूं। परन्तु वह किस प्रकार लिखूं? कौन २ विषय उसमें लिखूं? किस २ स्थान पर संक्षेप या विस्तार करूं? और किस परिपाटी से लिखूं? इत्यादि अनेक विचार मेरे मन में उपस्थित होते थे। इसका कारण यह है कि आजतक प्रबन्धरूप कोई भी ग्रन्थ हिन्दीभाषा में मैंने नहीं लिखा था। यद्यपि पूज्य पिताजो के समय में उनके लिखे हुए तथा और अनेक हिन्दी ग्रन्थों का मैंने परिशीलन किया है तथा कठिन २ स्थलों पर पूज्य पिताजी के मुखारविन्द से प्राप्त उत्तरों द्वारा हिन्दी नियमादि का बहुत कुछ मैंने परिचय भी प्राप्त किया है। तथापि प्रथम कार्य में त्रुटि होना स्वाभाविक धर्म है। बहुतलोगों का कहना यह था कि जीवनचरित्र सार्वजनिक विषय है; इसलिये उसका हिन्दी भाषा में ही होना परमावश्यक है। और मेरा भी यही सिद्धान्त है। श्रीपूज्यपाद गुणों के सागर तथा विद्या के पूर्ण अनुरागी थे और लोकोपकार करना अपना कर्तव्य समझते थे। उनका चरित्र अगाध है। मैं मन्दमति पूर्णतया कहांतक लिख सकता हूं। मेरी बुद्धि के अनुसार मेरी स्मरणशक्ति में उनके सत्य २ गुणों के चरित्र ने जिस प्रकार प्रवेश कर मुझे प्रेरित किया है तदनुसार यह चरित्र मैंने वर्णन किया है। इसमें असत्य तथा अतिशयोक्ति का स्पर्शमात्र नहीं है। पाठक महोदयों से प्रार्थना है कि इसमें लिखे हुए विषयों में आपलोगों को कभी किसी प्रकार का सन्देह उपस्थित हो तो आप मुझसे प्रश्न करके अपना सन्देह मिटा सकते हैं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

इस चरित्र में चरित्रनायक के समान और २ महानुभावों का तथा उन २ स्थलों का विस्तार रूप से वर्णन किया गया है। उसको रसिक पाठक महोदय अप्रासङ्गिक न समझ कर केवल उसका तात्पर्य इतना ही समझें कि उन २ महानुभावों से तथा उन २ स्थलों से पूर्णतया परिचित होना ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

सारांश पूज्य पिताजी के आशीर्वाद ही से उन्हीं के इस चरित्र को अपने बुद्धि के अनुसार किसीतरह ग्रथन कर पाठक महोदयों के संमुख ग्रन्थरूप में उपस्थित कर रहा हूं। यह मेरा प्राथमिक कार्य होने से अनेक त्रुटियों से अवश्य ही परिपूर्ण होगा। इसलिये रसिक पाठक महोदय की सेवा में सविनय मेरी प्रार्थना यह है कि इसके दोषों के तरफ ध्यान न देकर दोषों के लिये मुझे क्षमा प्रदान कर इस प्रबन्ध को कृपापूर्वक प्रेमदृष्टि से पूर्णतया पढ़ने का परिश्रम उठावें और आगे इसीतरह कार्यक्षेत्र में अग्रसर होने के लिये मेरे उत्साह को बढ़ावें। इति शुभम्।

श्री गङ्गासप्तमी
संवत् १९८१
ताः ११-५-२४

भवदीय
श्रीनाथ शास्त्री वेताल
काशी.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कै० स्व० दै० ज्यो० पूज्य श्री ६ विनायक शास्त्रीजी वेताल महोदय द्वारा विरचित तथा संगृहीत, प्रकाशित और अप्रकाशित संस्कृत तथा हिन्दी

जो ग्रन्थ उपलब्ध हैं उनकी नामावली।

१ त्रिप्रश्नसंबन्धि कतिपय प्रश्नविचार
२ रसियाकी कविताएं
३ याणमाथाष्टक
४ दिनचर्या मासिक पुस्तक
५ वारकुञ्चिका
६ एकादशीनिर्णय
७ पाखण्डविडम्बन
८ सि० शिरोमणि पर टिप्पणी
९ ब्रह्मतुल्य सोपपत्तिक
१० यजु० त्रिकालसन्ध्या
११ जानकी परिणय नाटक
१२ रुक्मिणी हरण नाटक
१३ पंचाङ्गपाटी संग्रह
१४ संयुक्ताक्षर योगसूत्र
१५ सार्थ शब्दरूपावली
१६ सार्थ धातुरूपावली
१७ रेणुका स्तोत्र
१८ अधिकमास व्यवस्था
१९ ता० नीलकण्ठी सटीक
२० निर्णयोपक्रम
२१ ईशावास्य उप० भा० टी०
२२ लघुपाराशरी सटीक
२३ निरङ्कुश कशा
२४ वधूवर घटित विचार
२५ पंचपक्षी सटीक
२६ श्रावणी प्रयोग
२७ वैश्वदेव प्रयोग
२८ बलिहरण प्रयोग
२९ दर्शपूर्णमास या० हौत्र
३० दर्शपूर्णमास आग्नीध्र
३१ दर्शपूर्णमास ब्रह्मत्व
३२ स्थालीपाक प्रयोग
३३ आग्रयणेष्टि आध्वर्यव
३४ पावमानेष्टि हौत्र
३५ पशुबन्धे याजुष हौत्र
३६ चातुर्मास्य प्रयोग
३७ पशु प्रयोग
३८ अग्निष्टोमपद्धति
३९ शिक्षापत्री ध्वान्त भास्कर
४० पूर्णाभिषेक पद्धति
४१ अन्त्येष्टि पद्धति
४२ श्राद्ध प्रयोग
४३ पंचदश मालाक्षर गणना
४४ लघुषोढा न्यास
४५ महा षोढा न्यास
४६ अष्टाङ्ग विधि
४७ पुरश्चरण विधि
४८ पराध्यान
४९ मुद्रोद्धार
५० मुख्य चतु० पारायणविधि
५१ जैमिनिसूत्र सटीक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

स्वधर्मधुरन्धर दैवज्ञवाचस्पति–ज्योतिष्पारदृश्वा

श्री ६ पू० विनायकशास्त्रीजी वेताल काशी

जन्म संवत् १९०६

मृत्यु संवत् १९६९

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीगणेशाम्बागुरुभ्योनमः ॥

स्वधर्मधुरन्धर दैवज्ञवाचस्पति

ज्योतिषशास्त्रकुशल

श्री ५ पूज्य विनायक शास्त्रीजी वेताल का जीवनचरित्र ।

पुण्यसलिला श्रीगङ्गाजी के तीर पर जगत्प्रसिद्ध मुक्ति-पुरी श्रीकाशी नाम से प्रसिद्ध है। जिसको भगवान श्रीविश्वनाथ अपने त्रिशूल पर धारण करते हुए सर्वदा सुरक्षित रखते हैं। और जिस मुक्तिपुरी में वे श्रीअन्नपूर्णा ढुण्ढिराज कालभैरव आदि अपने परिवार के साथ स्वयं निवास करते हुए [illegible] में तारकोपदेश देकर [illegible] को प्राप्त कराते हैं। ऐसे परम-[illegible] शास्त्र-[illegible] वाले

[illegible]

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

स्वधर्मधुरन्धर वैयाकरणवाचस्पति-ज्योतिषपारदृश्वा

श्री ६ पू० विनायकशास्त्रीजी वेताल काशी

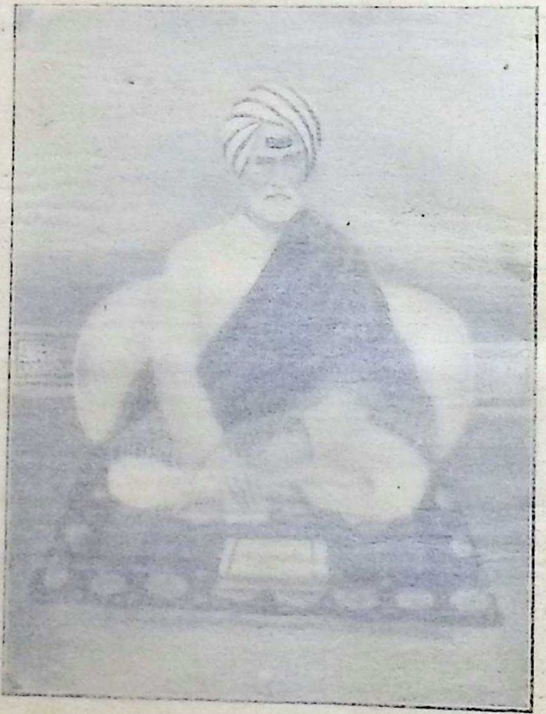

जन्म संवत
१९०६

मृत्यु संवत्
१९६९

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीगणेशाम्बागुरुभ्योनमः ॥

स्वधर्मधुरन्धर दैवज्ञवाचस्पति

ज्योतिष्पारदृश्वा

श्री ६ पूज्य विनायक शास्त्रीजी वेताल का जीवनचरित्र ।

पुण्यसलिला श्रीगङ्गाजी के तीर पर जगत्प्रसिद्ध मुक्तिपुरी श्रीकाशी नाम से प्रसिद्ध है। जिसको भगवान श्रीविश्वनाथ अपने त्रिशूल पर धारण करते हुए सर्वदा सुरक्षित रखते हैं। और जिस मुक्तिपुरी में वे श्रीअन्नपूर्णा धुण्ढिराज कालभैरव आदि अपने परिवार के साथ स्वयं निवास करते हुए कृमिकीटादि मनुष्यान्त जीवमात्र को अन्तसमय में तारकोपदेश देकर अपनी सायुज्यमुक्ति को प्राप्त कराते हैं। ऐसे परमपवित्र स्थान में अनेक शताब्दियों से भारद्वाजवंशीय दाक्षिणात्य महाराष्ट्र ब्राह्मण वेताल * इस प्रसिद्ध उपनामवाले

---

* इस उपनाम का प्राचीन इतिहास वृद्धपुरुषों के मुख से इस प्रकार सुनने में आया है कि इस वंश में कोई एक पुरुष महाबली और बड़ेभारी विद्वान् हुए हैं। वे ही इस उपनाम के मूल हैं। और उन्होंने ही प्रथमतः काशी में आकर निवास किया। उनके गुणों की बहुत सी कथाओं में से जिनका कि इस उपनाम से सम्बन्ध है उनमें से २-३ कथाएँ केवल दिग्दर्शनार्थ यहां पर लिख रहा हूं।

(१) किसी एक समय वे महोदय यात्रा के उद्देश्य से घरसे निकलकर मार्ग के किसी एक नगर में पहुंचे। वहां उनकी प्रकृति कुछ अस्वस्थ होने के कारण कुछ दिन निवास कर आरोग्यता पाने के लिये एकान्त स्थान ढूंढने लगे। संयोग से किसी ब्राह्मण का एक एकान्त स्थान का मकान इनको रहने के

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

निवास करते आए हैं इनका मूलस्थान दक्षिण देश है। इस कुल में गदाधरभट्टनामक एक बड़े तेजस्वी पुरुष हुए। जो शारीरिक तथा बुद्धिबल में बड़े प्रभावशाली हुए। साङ्गवेद जिनके जिह्वा पर नृत्य करता था। शब्दशास्त्र जिनके हृदयादर्श पर सर्वदा प्रतिबिम्बित रहता था। ज्योतिःशास्त्र जिनको हथेली पर रखे हुए दीपक के समान था। मन्त्रशास्त्र तो जिनको साक्षात् प्रत्यक्ष था। उनका विवाह काशीस्थ एक कुलीन कन्या के साथ होकर समय पर उनको एक पुत्ररत्न भी हुआ। जिनका नाम

लिये मिल गया। वहां पर आनन्दपूर्वक अपना स्नानसन्ध्यादि अनुष्ठान करते हुए रहने लगे। कुछ दिनों के बाद उस मकान के मालिक ने इनसे मिलकर कहा कि कल अमावास्या है। इसलिये आज से तीन दिन तक मैं यहां रहूंगा। और अकेला ही रहूंगा। तब तक आप किसी दूसरे स्थान में जाकर रहें। तीन दिन के बाद फिर यहां आकर रहें। प्रतिमास का मेरा इसीतरह नियम है। उसपर उन महोदय ने कहा कि आप यहांपर खुशी से रहें। मुझे निकलने के लिये क्यों कहते हैं। मैं भी आपके साथ यहांपर हो पड़ा रहूंगा। उसपर उस मकान के मालिक ने उनसे कहा कि आपको अपना जीवन धोखे में डालना हो यहां रहें। इसपर उन महोदय ने कहा कि मैं डरपोक नहीं हूं। यहां ही रहकर क्या चमत्कार होता है सो देखूंगा। आप मेरे विषय में बिलकुल चिन्ता न रखें। इसप्रकार वार्तालाप कर वे वहीं रहे। मकान का मालिक भी वहां आकर रहा। दूसरे दिन अर्थात् अमावास्या को आधीरात के समय मकान का मालिक अपने स्थान से उठा और अत्यन्त विकराल रूपसे नाचता कूदता हुआ उनके पास आकर मुख फाड़ कर बड़े क्रोध से बोला कि 'क्या मुझे नहीं जानते कि मैं वेताल हूं? तुम इस मकान के मालिक के मना करने पर भी यहां ठहरे हो तो अब उसका फल भी भोगने को तयार हो जाओ'। ऐसा कहकर उन महोदय को खाने के लिये पास में दौड़ कर आया। इतने में उन्होंने बहुत शीघ्रता के साथ उठकर उसके हाथ पकड़ कर पावों में पांव फँसाकर उसे गिरादिया और उसके छाती पर सवार होकर कहा कि अब मुझे क्यों नहीं खाते हो। उसपर उसने कहा कि एक वार मुझे छोड़दो तो मैं तुमसे सामना करूं। तब उन महोदयने उसे छोड़दिया और कहा कि अब

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बालकृष्णभट्ट रखा गया। अपनी वृद्धावस्था तक गदाधरभट्ट जी ने काशीनिवास कर अपने पुत्र बालकृष्णभट्टजी को बहुत परिश्रमपूर्वक स्वयं पढाकर उत्तमोत्तम विद्वान् बनाया। उन्हों ने अपने जीवन में अनेक लोकोपकार के कर्म किये। किसीसमय आर्यावर्तान्तर्गत परमपवित्र श्रीविन्ध्यक्षेत्रनिवासि एक संपन्न ब्राह्मण ने अपने इष्टकार्यसिद्धि के लिये श्रीविन्ध्यक्षेत्र में बड़े आदर के साथ सकुटुम्ब चलने के लिये उनसे प्रार्थना की। गदाधरभट्टजी बहुत दयालु थे इसीकारण वृद्धावस्था में भी

आओ। उपरान्त दोनों का घोर युद्ध प्रातःकाल तक होता रहा। कभी २ मकान का मालिक जीतता था और कभी २ महोदय जीतते थे। अन्त में प्रातःकाल के समय वेताल ने कहा कि मैं तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हूं। जो चाहो सो वर मांगो। तब उन महोदय ने कहा कि मैं कुछ नहीं चाहता हूं। केवल यही चाहता हूं कि इस मकान के मालिक ब्राह्मण पर तुम अपनी जो छाया रखते हो उसे छोड़दो। तब वेताल ने कहा कि मैं इसको छोडने वाला नहीं था परन्तु तुह्मारे कहने से अब छोड देता हूं। और मैं अपनी तरफ से तुमको विना मांगे यह वर देता हूं कि तुम्हारे कुल के पुरुष बड़े प्रभावशाली तथा उत्तम विद्वान् होकर **वेताल** इस उपनाम से प्रसिद्ध होंगे। ऐसा कहकर वेताल ने उस मकान के मालिक को छोड दिया। मकान के मालिक ने प्रसन्न होकर वह मकान उन महोदय को दक्षिणा सहित दान दे दिया। वे महोदय भी उस मकान में रहकर अपनी प्रकृति के आरोग्य होने पर वहां से अपने उद्दिष्ट स्थान पर गये। ऐसी कथा है।

(२) उन महोदय की एक और कथा यह है कि ज्ञाति के सरदारों ने उनको प्रकृति उद्दण्ड देखकर उनको ज्ञाति से अलग कर दिया। यह विना पाप का प्रायश्चित्त उनसे सहा नहीं गया। किसी समय एक स्थान पर समस्त ज्ञाति का भोजन रहा। उन महोदय को भोजन का निमन्त्रण नहीं था इस वृथा अपमान से उनको क्रोध उत्पन्न हुआ। उस क्रोध के आवेश में इन्हों ने उठकर वहां आकर पासही के किसी एक स्थान से बड़ी २ पत्थरों की चट्टानें पचीस तीस के लगभग क्रम से एकेक दोदो करके उठाकर वहां लेजाकर उस मकान के दरवाजे को बिलकुल बंद करदिया। और आप दरवाजे के बाहर ही बैठे रहे।

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

काशी छोड़कर श्रीविन्ध्यक्षेत्र में उस ब्राह्मण के उपकारार्थ सकुटुम्ब गए। उस ब्राह्मण ने उनके निवासार्थ एक उत्तम मकान उनको दान दिया और कुटुम्बपोषणनिमित्त तथा अनुष्ठाननिमित्त उनको उत्तम आश्रय दिया । उन्होंने थोड़े ही समय में अपने अनुष्ठानद्वारा उसका कार्य पूर्णतया संपन्न किया। इसपर उस ब्राह्मण ने प्रसन्न होकर उनको कई बीघे जमीन और बहुत द्रव्य दक्षिणा रूपमें भेट कर संतुष्ट किया। संयोग से वह जमीन अब दूसरों के हाथ चली गई है। उपरा-

---

सब लोग भोजन करके घर जाने के लिये जब रवाना हुए तब दरवाजे को बंद पाकर भीतर के भीतर ही रुकगये। इतनी चट्टानें हटाकर वहां से निकलना सभों को कठिन हो गया अन्त में ज्ञाति के सरदारों ने दरवाजे पर उनकी कुछ आहट पाकर उनसे क्षमा के लिये प्रार्थना की और कहा कि आप साक्षात् वेताल हैं अब आप की ज्ञाति में किसी प्रकार की रुकावट नहीं रहेंगी आप हमलोगों का रास्ता खुला करिए। तब उन्होंने पूर्ववत् वहां से सब पत्थरों की चट्टानें सहज में उठाकर पूर्वस्थान में रखकर दरवाजा खुला कर दिया। तब से 'वेताल के समान इनका बल है, इसलिये अब इनको वेताल कहा करो' ऐसी ज्ञाति में प्रसिद्धि होगई। ऐसी कथा है।

(३) उन महोदय के विद्वत्ता विजय की एक और यह कथा है कि पूर्व में जिस नगर में वे महोदय रहते थे वहां पर एक नास्तिक पण्डित शास्त्रार्थ द्वारा जयपत्र लेने के लिये आया। वह कई स्थानों से जयपत्र लेते हुए वहां आया था। और अपनी इष्टदेवता का पूर्णबल भी रखता था। उसने अपनी मण्डली के साथ नगर में घूम २ कर घोषणा करदी। उस नगर के राजासाहब ने उसकी वह घोषणा सुनकर शास्त्रार्थ के लिये सभा का स्थान तथा दिन और समय निश्चित किया उस नगर में उन महोदय के समान धुरन्धर पण्डित दूसरा कोई नहीं था इसलिये उस नास्तिक के साथ शास्त्रार्थ करने के लिये उन्हीं की नियुक्ति हुई। नियमित दिन को निश्चित समय तथा स्थान पर नगर की सर्व मण्डली एकत्रित हुई। सपरिवार राजासाहब, महोदय, नास्तिक तथा अन्य पण्डितमण्डली भी उपस्थित हुई। स्वयं राजासाहब उस देश के बड़े २ पण्डितों के साथ मध्यस्थ हुए। शास्त्रार्थ शुरू हुआ। नास्तिक के

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

न्त उस ब्राह्मणके तथा उस ग्रामनिवासि श्रेष्ठलोगों के अनुरोधसे गदाधरभट्टजी ने वहांपर ही रहना स्वीकार किया। किसी समय एक गलितकुष्ठी ब्राह्मण बड़े दुःख के साथ उनके शरण आया। उन्होंने अपनी स्वाभाविक दयालुता से उस ब्राह्मण को धैर्य देकर उसके निमित्त नमस्कारात्मक श्रीसूर्यनारायणका अनुष्ठान किया। और महारोग से उस दीन ब्राह्मण को मुक्त किया। इसप्रकार गदाधरभट्टजी आर्तजनों का उपकार करते हुए और अपना स्नानसन्ध्यादि अनुष्ठान यथावत् करते हुए

साथ उन महोदय का बड़ाभारी शास्त्रार्थ हुआ अनेक शास्त्रों में अनेक कोटि प्रतिकोटियाँ हुईं। बहुतसमय तक शास्त्रार्थ होता रहा। परन्तु किसी का पराजय नहीं हुआ। अन्त में राजा साहब ने दूसरे दिन के लिये सभा करना स्थिर कर सभा विसर्जन की। दूसरे दिन फिर उसीप्रकार सभा हुई। पूर्वदिन के समान ही किसी का पराजय नहीं हुआ। इसतरह २१ दिन तक उनदोनों का बराबर शास्त्रार्थ होता रहा। अन्त में वेताल ने अपने बरदानानुसार उन महोदय की प्रतिष्ठा रखने के लिये उनके शरीर में अपना संचार किया। जब उनके शरीर में वेताल का संचार हुआ तब उनकी प्रकृति भी विकराल होगई और वाणी का धाराप्रवाह शुरू हुआ। उस समय नास्तिक प्रतिवादी से शास्त्रार्थ में उन्होंने यह कहा कि मुझे नहीं जानते हो मैं 'वेताल' हूं। मेरे सामने तुम्हारी तुच्छ शक्ति है। कहांतक ठहर सकते हो। यह सब लोगों को दिखला दूंगा। इसप्रकार कहते हुए उन्होंने चार पांच कोटि प्रतिकोटियोंके भीतर ही उस नास्तिक को अपने शास्त्रीय यथार्थ उत्तर द्वारा पराजित किया। नास्तिक का मुख बंद होगया। उसकी सब स्मरणशक्ति नष्ट होगई। वह अपने चित्त में अत्यन्त खिन्नहोकर कुछ समय तक चुपचाप बैठा रहा। सभा भी स्थिर रही। अन्त में बिना किसी से पूछे बिना जयपत्र लिये वह नास्तिक सभा से उठकर चला गया। उसके जाने बाद वेताल ने भी उनके शरीर से अपना संचार हटा लिया। सर्वत्र उन महोदय का जय २ कार हुआ राजासाहब ने उन महोदय को वस्त्रदक्षिणादि से संतुष्ट करके कहा कि आपके ऊपर वेताल की कृपा है। आप साक्षात् वेताल हैं। उपरान्त राजा साहब ने सभा विसर्जन की। ऐसी कथा है॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अत्यन्त पवित्र उस विन्ध्यक्षेत्र में अपनी शेष आयु व्यतीत कर श्रीभगवती के सायुज्य को प्राप्त हुए। उनके पुत्र बालकृष्णभट्टजी उससमय १६ वर्ष की अवस्था के थे। उन्होंने इस थोडी अवस्था में ही अपने पिताजी से साङ्ग वेदाध्ययन तथा शब्दशास्त्र ज्योतिषशास्त्र और मंत्रशास्त्र का पूर्णज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण थी। कोई भी विषय हो त्रिवार पाठ करने से उनको उपस्थित होजाता था। उससमय उनकी माता विद्यमान थीं। उनके अनुरोध से कर्मकाण्ड का ज्ञान प्राप्त करने के लिये इन्हें काशी जाना पड़ा। काशी में अपनी माता के साथ कुछ समय निवास कर एक वयोवृद्ध उत्तम कर्मकाण्डीजी की शुद्धान्तःकरण से सेवा करते हुए थोड़े ही समय में उन्हों ने कार्मकाण्ड का भी पूर्णज्ञान प्राप्त कर लिया। उस समय श्री काशीक्षेत्र में उनकी गणना उत्तम पण्डित मण्डली में की जाती थी। उनकी माता ने एक काशीस्थ कुलीन विद्वान् ब्राह्मण की लक्ष्मी नामकी कन्या के साथ अपने पुत्रका विवाह करके अपनी आयुर्मर्यादा को पूर्ण कर काशीवास किया। तब बालकृष्णभट्टजी मातृपितृवियोग से बहुत दुःखी हुए। उनके चित्तकी अस्वस्थता शोचनीय होने लगी। ऐसेसमय जगदम्बिका श्रीविन्ध्यवासिनीजी ने उनके उपर दया कर अपने स्थान में उपस्थित होने के लिये स्वप्न में उन्हें प्रेरणा की। तदनुसार बालकृष्णभट्टजी अपने धर्मपत्नी के साथ फिर विन्ध्यक्षेत्र में गए। श्रीभगवतीजी की कृपा से थोड़े ही समय में स्वस्थचित्त हुए वहांपर गार्हस्थ्यधर्म का पूर्णतया पालन करते हुए अपने नित्यानुष्ठान में तत्पर रहते थे। श्रीविन्ध्यक्षेत्र के प्रान्त में वापी कूप तड़ाग मंदिर गृह आदि की अनेक प्रतिष्ठाएँ तथा उत्सर्ग उन्होंने कराये थे। ज्योतिःशास्त्रद्वारा चोरी गई हुई वस्तु का लाभालाभ, चोरका लक्षण,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भाग्योदय, सान्तानयोग, विवाहयोग आदि ठीक २ कह देते थे। मृत्युसमय का अनुमान भी उनका कहाहुआ बहुत ठीक होता था। मन्त्रानुष्ठान में भी उनका बल ऐसा था कि बड़े २ राजरोग कुष्ठ आदि अपने अनुष्ठानद्वारा थोड़े ही समय में वे निःशेष कर देते थे। इसप्रकार श्रीविन्ध्यक्षेत्र में अपने धर्मपत्नी के साथ निवास करते हुए बालकृष्णभट्टजी को क्रम से ३ पुत्र तथा २ कन्याएँ हुईं। एक कन्या का वंश श्रीकाशीक्षेत्र में इससमय वृद्धिगत होते हुए सर्वसुख से परिपूर्ण है। तीन पुत्रों में ज्येष्ठपुत्र जिनका नाम लक्ष्मीनाथ था उनको पिताजी ने व्याकरणशास्त्र पढ़ाया। वे लोगों में बाबाशास्त्री नाम से प्रसिद्ध थे। और व्याकरणशास्त्र में ऐसे पारंगत हुए कि जिनके पढ़ाये हुए और अभ्यास कराये हुए लोग धुरन्धर पण्डित गिने जाते थे। मध्यमपुत्र जिनका नाम रामभट्ट था उनको पिताजी ने साङ्गवेद तथा कर्मकाण्ड पढ़ाया। और व्यवहारशास्त्र में उत्तम प्रवीण किया। जो कर्मकाण्ड तथा व्यवहारशास्त्र में इतने कुशल हुए कि जिनकी अनुमति से बहुत लोग अपनी इष्टार्थसिद्धि प्राप्त करते थे। कनिष्ठपुत्र जो हमारे चरित्र के नायक हैं इनका जन्म वैक्रमीय संवत् १९०८ वैशाख शुक्ल ९ भौमवार को अत्यन्त पवित्र तपोभूमि श्रीविन्ध्यक्षेत्र में हुआ। इनके पिताजी बालकृष्णभट्टजी ने जन्मसमय इनकी जिह्वा पर विधिपूर्वक रक्तचन्दन से वाग्भवबीज लिख कर नालच्छेद जातकर्मसंस्कार बड़े समारोह के साथ किये। समय पर नामकरणसंस्कार करके पिताजी ने इनका नाम '**विनायक**' रक्खा। निष्क्रमण अन्नप्राशन तथा चौलसंस्कार यथासमय पिताजी ने इनके किये। इनकी तीक्ष्णबुद्धि देख कर पंचमवर्ष की अवस्था में ही पिताजी ने इनका यज्ञोपवीतसंस्कार किया। बालकपन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

में ही इनकी बुद्धि का प्रकाश पड़ता था इनकी बुद्धि अत्यन्त प्रतिभायुक्त तथा तीव्र थी। जो काम करते थे बड़े उत्साह के साथ पूर्ण करके लोगों को चकित कर देते थे। यज्ञोपवीत के उपरान्त पिताजी ने इनसे नियमपूर्वक सवालाख गायत्रीजप तीन वर्षों में कराया। इस अवधि में इनका अक्षरारंभ करा कर उत्तम वाचनशक्ति प्राप्त कराई उपरान्त शिक्षादि वेदाङ्गग्रन्थ पिताजी ने स्वयं इनको पढ़ा कर वेदसंहिता भी कुछ पढ़ाई। पिताजी (बालकृष्णभट्टजी) की वृद्धावस्था होगई थी इसलिये उनको अपना नित्यानुष्ठान करके इनके अध्ययन के तरफ विशेष ख्याल रखना कठिन पड़ता था। श्रीविन्ध्यक्षेत्र में दूसरा कोई ऐसा विद्वान् भी न था कि जिसके सुपुर्द इन्हें करते। जो कुछ हो सकता था स्वयं ही पढाया करते थे। इस कारण से इनके पढन में बहुत त्रुटि हुई। इनका खेल कूद में ही बहुत समय बीतता था। नाममात्र के लिये कुछ २ पढना होता था। ऐसी स्थिति में भी इनकी तीव्रबुद्धि होने से ये जो कुछ पढते थे बहुत शीघ्र कण्ठस्थ कर लेते थे। इसप्रकार वेद और वेदाङ्गविषय का इनका पठन बहुत कुछ हुआ । शास्त्रीयविषय में तो रूपावली समासचक्र धातुरूपावली और कुछ अंश कोष का भी पिताजी ने इनको पढ़ाया था। पिताजी की वृद्धावस्था थी इस कारण उनकी इच्छा हुई कि अब काशीवास करें। संयोग से उनके धर्मपत्नी के मामा कवीश्वर नामक श्री काशीजी में रहते थे। वे भी वृद्ध थे। और उनको कोई नहीं था। उनका श्री काशीजी में निजका एक मकान था। उनकी इच्छा हुई कि हमारे पास हमारी भांजी सकुटुम्ब आकर रहे। यह इच्छा उन्होंने बालकृष्ण भट्टजी से प्रकट की। वे भी यही चाहते थे। उन्होंने कवीश्वरजी की पूर्णइच्छा समझ कर अपना निश्चय पक्का किया। और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्रीविन्ध्यक्षेत्र के अपने मकानमें एक सुयोग्य कुलीन दाक्षिणात्य कुटुम्बी ब्राह्मण जिनको उन्होंने अपने सोहबत के लिये रखा था उनको अपना श्रीविन्ध्यक्षेत्र का मकान दक्षिणासहित दान कर दिया। दान के समय अपने मकान की केवल एक कोठरी अपने तरफ छुडा ली। कारण कि जब कभी श्रीविन्ध्य क्षेत्र में अपने या अपने सन्तान को जाना पड़े तो दत्तभूमि में निवास दोषकारक न हो इस उद्देश्य से ऐसा किया। और साथ में यह प्रतिज्ञा रखी कि इस मकान को बेचनो नहीं। स्वयं और अपने सन्तान लोग इसमें सुखपूर्वक रह कर इस मकान की सुव्यवस्था रखें। और जो यात्री दर्शननिमित्त इस क्षेत्र में आवें और निवास के लिये स्थान चाहें तो उनको अपने यहां स्थान देकर उत्तमतया उनकी व्यवस्था करावें बालकृष्णभट्टजी ऐसी व्यवस्था कर सकुटुम्ब श्रीकाशी क्षेत्र में आये। यहां पर पूर्वोक्त कवीश्वरजी के पास आकर रहे। कनिष्ठपुत्र जो इस चरित्र के नायक हैं इनकी रुचि शास्त्रीयविषय में अधिक देख कर इनको शास्त्र ही पढ़ाने का निश्चय किया। उससमय श्रीकाशीक्षेत्र में बालशास्त्री नाम के एक दिग्गज पण्डित थे। जिनको साक्षात् सरस्वती का अवतार कहते थे। बालकृष्णभट्टजी ने अपने कनिष्ठपुत्र को १४ वर्ष की अवस्था में शास्त्र पढ़ाने के लिये उनके पास जाकर सौंप दिया। और स्वयं निश्चिन्त होकर अपना नित्यानुष्ठान सुखपूर्वक करने लगे। ज्येष्ठपुत्र तो मण्डीमहाराज की सेवा में उनके आश्रित होकर मण्डीराजधानी के पाठशाला में पढ़ाते रहे। इसलिये घर की सब व्यवस्था मध्यमपुत्र ही करते थे। कवीश्वर जो धनी थे तथा उनकी याजमान्यवृत्ति भी उत्तम थी वह सब उन्होंने बालकृष्णभट्टजी के सुपुर्द कर स्वयं ईश्वर भजन में तत्पर रहे। इसप्रकार कुछ समय बीतने पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एकसमय कवीश्वरजी की प्रकृति रोगाक्रान्त हुई। उससमय उन्होंने अपना अन्तसमय समझ कर अपना मकान याजमान्यवृत्ति तथा धनधान्यदि जो कुछ श्रीकाशीक्षेत्र में था वह सब सपत्नीक बालकृष्णभट्टजी को दान देकर समय पर कैलासवास किया। बालकृष्णभट्टजी अपने कुटुम्ब के साथ सर्वसंपत्ति से पूर्णसुखी होकर श्रीकाशीक्षेत्र में आनन्दपूर्वक निवास करने लगे। कुछ समय के उपरान्त बालकृष्णभट्टजी की सौभाग्यवती धर्मपत्नी ने अपने सौभाग्य को पूर्ण रख कर कैलासवास किया। पूर्व में हम कह आये हैं कि हमारे चरित्र के नायक बड़े प्रभावशाली तथा तीक्ष्णबुद्धि के थे। उन्होंने थोडे ही समय में अर्थात् २० वर्ष ही की अवस्था में काव्य कोष तथा साङ्गव्याकरण का उत्तमज्ञान बालशास्त्रीजी की कृपा से प्राप्त कर वेदान्तादि दर्शनशास्त्रों में भी अपनी सामान्यगति प्राप्त करली थी। तब बालशास्त्रीजी इनको 'विनायकशास्त्री' इस नाम से कहने लगे। अब आगे चल कर हम भी पू० शास्त्रीजी या पू० पिताजी इन शब्दों से इनका उल्लेख किया करेंगे। उपरान्त पू० शास्त्रीजी को ज्योतिष पढने की इच्छा हुई। उससमय श्रीकाशीक्षेत्र में ज्योतिषशास्त्र के सुप्रसिद्ध विद्वान् म० म० श्री० पू० बापूदेव शास्त्रीजी सी. आई. ई. थे। उनके पास पू० शास्त्रीजी ने ज्योतिषाध्ययन शुरू किया। पूर्व में शब्दशास्त्राभ्यास से इनको उत्तम व्युत्पत्तिज्ञान हुआ था तथा स्वयं बुद्धिमान् थे और गुरुवर भी योग्य थे ऐसे संयोग से थोडे समय में ही पू० शास्त्रीजी ने ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तग्रन्थों में पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त कर लिया। और इन्होंने ज्योतिष के संहिता तथा फलित इन दोनों अङ्गों में तथा वेदान्त न्याय मीमांसा सांख्य योग धर्मशास्त्र आदि शास्त्रीयविषयों में भी दोनों गुरुवरों की

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पूर्णकृपा से तथा अपने बुद्धिवैभव से उत्तमोत्तम योग्यता प्राप्त की। और उसी विद्यार्थिदशा में पू० शास्त्रीजी ने 'त्रिप्रश्न-सम्बन्धि कतिपयप्रश्न विचार' नामक एक ज्योतिष ग्रन्थ निर्माण कर प्रकाशित भी किया था। श्रीकाशीजी में धर्माधिकारि कुल के पुरुष बहुत प्राचीन समय से निवास कर रहे हैं। इस श्रेष्ठकुल में कृष्णपन्त नामक एक पुरुष साहित्य व्याकरण और धर्मशास्त्र के अद्वितीय विद्वान् हुवे। उनको गङ्गा नामक एक कन्या थी। कृष्णपन्त धर्माधिकारीजी श्री पू० बापूदेवशास्त्रीजी के प्रियमित्र थे। वे अपने कन्या को विवाहयोग्य समझ कर श्री पू० बापूदेवशास्त्रीजी के पास विवाहविचार के उद्देश्य से मिलने गये। उससमय पू० शास्त्रीजी अपने गुरुजी के समीप अध्ययन कर रहे थे। पं० कृष्णपन्तजी ने अपना आने का अभिप्राय श्री पू० बापूदेव-शास्त्रीजी से प्रकट किया। उन्होंने बहुत सोच विचार कर पं० कृष्णपन्तजी को कहा कि आपके महाराष्ट्रज्ञाति का उत्तम विद्वान् पुरुष आपके सामने हीं है। शास्त्रीयज्ञान में मैं इस विद्यार्थी को अपने बराबर समझता हूं। यदि हो सके तो बहुत उत्तम वर है ऐसा श्री पू० बापूदेवशास्त्रीजी ने पू० शास्त्री-जी को उद्देश कर कहा। उससमय पू० शास्त्रीजी संकुचित हुवे। पं० कृष्णपन्तजी भी कुछसमय बैठ कर और अन्यवार्ता-लाप कर अपने घर गये। उपरान्त उन्होंने वही निश्चय करके पू० शास्त्रीजी के पिताजी बालकृष्णभट्टजी से प्रार्थना की। उन्होंने भी सहर्ष स्वीकार किया। विवाहलग्न स्थिर होकर बहुत आनन्दोत्सव के साथ पू० शास्त्रीजी का विवाह हुवा। बालकृष्णभट्टजी ने अपनी स्नुषा का नाम 'रुक्मिणी' रखा। पू० शास्त्रीजी ने मन्त्रशास्त्र का ज्ञान तो बाल्यावस्था ही में अपने पिताजी से बहुत कुछ प्राप्त कर लिया था। अब इस अवस्था में

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उन्होंने उस ज्ञान को अपने बुद्धिवैभव से बहुत बढा लिया सारांश बुद्धिमान् मनुष्य को सब ग्रन्थ गुरु से पढने नहीं पडते। केवल उन २ विषयों में गति होना आवश्यकीय होता है। इसप्रकार पू० शास्त्रीजी ने १४ वर्ष की अवस्था से २२ वर्ष की अवस्था तक अर्थात् आठ वर्ष की अवधि में सर्वशास्त्रों में पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त कर लिया। और काशीस्थ राजकीय प्रधान सांस्कृत पाठशाला में पृथक् २ आचार्य परीक्षा देकर सर्व शास्त्रों में उत्तीर्ण होकर गवर्नमेन्ट से प्रतिष्ठापत्र प्राप्त किया। उससमय सर्वशास्त्रों की आचार्यपरीक्षा एक ही काल में हो सकती थी। और सब परिक्षाएँ उत्तम २ विद्वान मण्डली तथा प्रिन्सिपल महोदय के समक्ष मौखिक होतीं थी। इस प्रकार पू० शास्त्रीजी सर्वशास्त्रों में उत्तम विद्वत्ता रखते हुए भी साधारण मनुष्य के समान अपना वर्तन रखते थे। प्रतिवादी के सामने तो सिंह के समान उग्ररूप धारण करते थे। परन्तु रसिकता इनमें पूर्ण विराजमान रहती थी। गुरुसेवा पितृसेवा तथा सुयोग्य वृद्धजनों की सेवा अपना कर्तव्य समझते थे। इसप्रकार काशीस्थ विद्वन्मण्डली में संमानित होकर पू० शास्त्री जी काशीनिवास करते थे। उससमय मेवाडप्रांत उदयपुर राजधानी से एक पत्र काशीस्थ राजकीय प्रधान संस्कृत पाठशाला के प्रिन्सिपल ग्रिफिथ महोदय के पास आया। उसमें लिखा था कि यहां पर एक पण्डित की आवश्यकता है जो सव्याकरण हिन्दीभाषा तथा गणितशास्त्र और संस्कृत में भी पूर्ण पाण्डित्य रखता हो यथोचित आश्रय दिया जायगा। वह नोटिस प्रिन्सिपल महोदय द्वारा म० म० श्री पू० बापूदेव शास्त्रीजी के पास आई। उक्त पण्डितजी उससमय उस पाठशाला में ज्योतिषशास्त्र के प्रधानाध्यापक थे। उन्होंने उस नोटिस को देखकर अपने अन्तःकरण में निश्चय करके

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हमारे चरित्रनायक को प्रेमपूर्वक कहा कि यह नोटिस देखो इस कार्य के लिये हम तुम्हारी योग्यता पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। यदि अनुकूल हो तो स्वीकार करो। इस पर पू० शास्त्रीजी ने सविनय उत्तर दिया कि पूज्य पितृचरण तथा गुरुचरणों के अनुग्रह से आज्ञानुसार सब कुछ कर सकता हूं। उपरान्त श्री पू० बापूदेवशास्त्रीजी ने कहा कि अपने पिताजी की आज्ञा लेकर अपना निश्चय पक्का कर उत्तर देना। उपरान्त पू० शास्त्रीजी ने अपने पूज्य पिताजी की आज्ञा प्राप्त कर गुरुजी से अपना जाने का निश्चय पक्का कह दिया। श्री पू० बापूदेव शास्त्रीजी ने समयानुसार देशकालोचित उत्तम उपदेश तथा आशीर्वाद देकर उदयपुर राजधानी में जाने के लिये सम्मति दी। उससमय पू० शास्त्रीजी की अवस्था २२ वर्ष की थी। उस समय अजमेर तक रेलवे थी। बाद कुछ वर्षों के चित्तोडगढ तक होगई। वर्तमान श्रीमान् महाराणाजी साहब महोदय ने अब चित्तोडगढ से अपने खास राजधानी तक अपना रेलवे कर दी है पू० शास्त्रीजी ने अपने पूज्य पिताजी तथा पूज्य दोनों गुरुवरों की आज्ञा और आशीर्वाद प्राप्त कर काशी से प्रस्थान कर अजमेर तक रेलवे द्वारा पहुँच गये। वहां से बैलगाडी द्वारा रवाना होकर एक सप्ताह में उदयपुर राजधानी पहुँचे। पू० शास्त्रीजी उदयपुर राजधानी में कईवार सकुटुम्ब और अनेकवार अकेले भी गये। उदयपुर राजधानी सूर्यवंशीय क्षत्रियश्रेष्ठ श्रीमान् महाराणाजी उदयसिंहजी ने बसाई है। इनके पूर्व चित्तोडगढ पर राजधानी थी। उदयपुर नगर पिछौला नामक तलाव के तीर पर बसा है। तलाव के दोनों तटों पर शहर का दृश्य अतिसुंदर है। पूर्वतट पर श्रीमान् महाराणाजी साहब का राजमहल अपूर्व शोभा दे रहा है। शहर का दृश्य भी दर्शनीय है। अच्छी २ सडकें, सुंदर हवेलियां, औषधालय, पाठशाला, देवमन्दिर,

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

घंटाघर, प्रेस, बाजार आदि एक से एक बढ़कर शोभा दे रहे हैं। शहर का कोट भी दूर से अपूर्व शोभा देता है। इसप्रकार इस नगर की अवर्णनीय सुन्दर शोभा है। उससमय विद्या के पूर्ण-प्रेमी गुणग्राहक मेवाडदेशाधिपति श्रीमान् आर्यकुलकमल-दिवाकर महाराणाजी श्रीशंभुसिंहजी राज्यासन को सुशोभित कर रहे थे। श्रीमान् महाराणाजी साहब के विषय में समस्त संसार जानता है कि हिन्दुधर्म को श्रीमान् के कुलपुरुषों ने ही निष्कलङ्क रखा है। जिनके तेज प्रताप तथा दयालुता की शत्रुलोग भी स्तुति करते थे। आजतक इसीप्रकार इस राज्य-सिंहासन पर श्रीमहाराणाजी साहब बिराजते आये हैं। सूर्य-वंशीय वीर क्षत्रियों का गुणवर्णन करना मानो सूर्य को दीपक दिखलाना है। श्रीमान् महाराणाजी साहब शंभुसिंहजी महोदय ने अपनी राजसभा में पू० शास्त्रीजी को सम्मानपूर्वक बुला कर यथोचित वार्तालाप कर उनकी विद्या में पूर्णयोग्यता समझ-कर अपनी शंभुरत्नपाठशाला में हिन्दीप्रधानाध्यापक का स्थान दिया। और उत्तमोत्तम आश्रय कर दिया। तथा अपनी राज-सभा में सभा की शोभावृद्धि के उद्देश्य से प्रतिदिन उपस्थित होने के लिये सम्मानपूर्वक आज्ञा दी। पू० शास्त्रीजी को पाठ-शाला में हिन्दी पढाना पडता था। उनको हिन्दीव्याकरणादि में परिचय कम था तथापि उन्होंने अपने संस्कृत नियमादि द्वारा हिन्दी के व्याकरणादि सब नियम नियमित कर के पढाना शुरू किया। थोडे ही दिनों में उन्होंने हिन्दी में अपनी शक्ति इतनी बढ़ा ली कि स्वयं हिन्दी की उत्तम २ कवितायें बनाने लगे। हिन्दीकाव्य की उनको बहुत रुचि हो गई। उन्होंने अपना नाम हिन्दीकाव्य के लिये "रसिया" रखा था। इस नाम से इनकी हिन्दी की कवितायें कुछ २ उपलब्ध हैं। इनके बुद्धि वैभव से सब लोग आश्चर्यान्वित होते थे। पाठशाला के

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रिन्सिपल महोदय भी इनपर बहुत सन्तुष्ट थे। उससमय प्रिन्सिपल-वेअर्ड-साहब थे। शिक्षाप्रणाली पाठशालानियम और परीक्षानियमादि संपूर्ण पाठशालीय कार्यक्रम नियमबद्ध करना प्रिन्सिपल महोदय ने इन्हींके सुपुर्द किया था। पू० शास्त्रीजी ने अपने बुद्धिवैभव से सब व्यवस्था उत्तमोत्तम कर दिखाई। यथासमय परीक्षा भी हुई। उसवर्ष छात्रगण भी उत्तमश्रेणी में अधिकसंख्या से उत्तीर्ण हुवे। इसीप्रकार इन्हींके नियमानुसार पाठशालीय कार्यक्रम संपन्न होता रहा। इनकी स्थिति में अनेक प्रिन्सिपल हुवे। उन सभोंने इन्हींके दिशानुसार इन्हींकी अनुमति से यथासमय कुछ २ नियमादि परिवर्तन भी किया। इलाहाबाद युनिवर्सिटी होने के समय से मिडिल और एण्ट्रेन्स क्लास के लिये सहायकभाषा एकदम संस्कृत करदी गई थी। उससमय इन्होंने विद्यार्थिगणों को अत्यन्त दुखीदेखकर संस्कृत बिलकुल नहीं जाननेवाले विद्यार्थियों के लिये सरल संस्कृत पाठनप्रणाली नियमित कर के विद्यार्थियों को परीक्षा से उत्तीर्ण कराया था। उसी समय से इनकी नियमित प्रणाली आजतक चल रही है। पू० शास्त्रीजी उदयपुर राजधानी में जाते थे तब रास्ते में विश्राम के लिये अजमेर शहर में एक दो दिन रह जाते थे। वहांपर इनके सतीर्थ्य उत्तम विद्वान् ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ पं० वंशीधरजी रहते थे। उनके ही गृह पर इनका विश्राम होता रहा। पं० वंशीधरजी के संबन्ध से अजमेर नगर के सेठजी श्रीमान् सिरहमलजी लोढाजी के साथ पू० शास्त्रीजी का प्रेमसंबन्ध बहुत बढ गया। वह आजतक बराबर परस्पर वंशजों के साथ पूर्णरूप से निभ रहा है। उदयपुर राजधानी से ७ कोस उत्तरदिशा में एक पूज्य पवित्र देवस्थान है। जो चारोंतरफ पर्वतों से घिरा हुआ है। जहांपर उत्तमोत्तम वृक्ष अपनी शोभा से स्थान को सुन्दरता बढा रहे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पर्वतों से निर्मल जल के झरने बहते हुए मार्ग को आर्द्र कर रहे हैं। इसप्रकार चमत्कारि मनोहरस्थान में स्वयंभू श्रीशंकर भगवान् पंचमुखी लिङ्गरूप से श्रीएकलिङ्गजी इस पवित्रनाम से विराजमान हैं। मेवाड़ के श्रीमान् महाराणाजी साहब, भगवान् श्रीएकलिङ्गजी को इस राज्य के राजा समझते हैं और स्वयं अपने को प्रधान (मन्त्री) समझते हैं। भगवान् श्रीएकलिङ्गजी का उत्तमोत्तम सामग्रीसहित वैदिक मन्त्रों द्वारा रुद्राभिषेकयुक्त त्रिकालपूजन प्रतिदिन होता है। इस प्रकार वह पुण्यस्थान है। इस स्थान में पू० शास्त्रीजी कईवार दर्शनार्थ गए हैं। वहां से ५ कोस पर श्रीनाथद्वार नामक वल्लभ वैष्णव संप्रदायि महानुभावों का एक मुख्य स्थान है। जो मेवाड भूमि में अत्यन्त पवित्र तथा प्रासादिक स्थान माना जाता है। वहां पर श्रीविष्णु भगवान् को सुंदरमूर्ति विराजमान है। श्रीमन्महाराजाधिराज गोस्वामि महोदय वहां सेवा के लिये स्वयं उपस्थित रहा करते हैं। उत्तमोत्तम सामग्री के साथ अहर्निश सेवा होती है। इसप्रकार पुण्यधाम है। पू० शास्त्रीजी दर्शनार्थ अनेकवार उस पुण्यस्थान में भी गए हैं। श्रीमान् गोस्वामिमहाराज इनका बहुत संमान करते थे। किसी एकसमय ग्रहण के निर्णयार्थ श्रीमान् गोस्वामिमहाराज ने इनको अपने धाम में बुलाया था। इन्होंने निर्णय कर प्रत्यक्षप्रमाण से अपना मत सिद्ध कर दिखाया था। उससमय श्रीमान् गोस्वामिमहाराज ने बहुत सन्तुष्ट होकर इनका उत्तमोत्तम संमान भी किया था। श्रीधाम में पू० शास्त्रीजी कईवार दर्शनार्थ तथा कार्य के निमित्त भी जाते थे। वहां से ४ कोस पर काँकरोली नामक एक वैष्णव स्थान है। वहां पर भी सेवा का उत्तमोत्तम प्रबन्ध है। पू० शास्त्रीजी दर्शनार्थ काँकरोली भी जाते थे। वहां के

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

महाराज भी उसीप्रकार इनका संमान करते थे। उस प्रान्त में चारभुजाजी का एक प्राचीन तथा चमत्कारिक स्थान हैं। वहां पर भी पू० शास्त्रीजी दर्शनार्थ गए थे। इत्यादि उस प्रान्तस्थ अनेकानेक चमत्कारिक पुण्यस्थानों का इन्होंने दर्शन किया था। सर्वत्र इनकी उत्तमोत्तम प्रतिष्ठा ही होती थी। पू० शास्त्री जी का ध्यान विद्योन्नति के तरफ विशेष रहता था। सारांश इनके समय ही से पाठशाला तथा विद्या की पूर्ण उन्नति हुई। आज यह पाठशाला श्रीमान् महाराणाजी साहब महोदय की सुदृष्टि से थोडे ही दिनों में कालेज रूप में परिणत होकर देशोन्नति करने को सिद्ध है। पू० शास्त्रीजी का सर्वोत्कृष्ट एक नियम यह भी था कि पाठशालीय कार्य के अनन्तर घर पर काव्य कोष व्याकरण वेदान्त न्याय मीमांसा सांख्य योग धर्मशास्त्र ज्योतिष वैद्यकआदि शास्त्र पढ़ाते थे। पू० शास्त्रीजी ने अपने घर पर 'आर्यविद्यालय' नामक पाठशाला स्थापन की। उदयपुर राजधानी के बड़े २ रईसों के पुत्र तथा नगरस्थ अन्य सुयोग्य विद्यार्थी इनके घर की पाठशाला में पढ़ते थे। इसप्रकार पू० शास्त्रीजी ने सबतरह देश में उन्नति कर दिखायी। इनके पढाए हुए लोग आज उस देश में बड़े २ अधिकारों पर काम कर रहे हैं। और इनके शिष्य उत्तम २ ज्योतिषी धर्मशास्त्री वैद्यराज आज उस प्रान्त में सर्वत्र फैले हुए हैं। यहां तक कि आज उस प्रान्त में विद्यास्थान (पाठशालाएँ) जहां २ हैं प्रायः उनमें कोई एकाद इनका शिष्य प्रशिष्य अवश्य मिलेगा। श्रीमान् महाराणाजी साहब शंभूसिंहजी की राजसभा में पू० शास्त्रीजी प्रतिदिन जाया करते थे। श्रीमान् महाराणाजी साहब विद्या के पूर्ण अनुरागी थे। इसलिये अपनी राजसभा में इनको बहुत संमान पूर्वक रखते थे। इन्होंने भी समय २ पर ज्योतिषशास्त्रानुसार ग्रहण, ग्रहों का योग, ग्रहयुद्ध, धूमकेतु दर्शन इत्यादि आ-

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

काशस्थित चमत्कारों को ठीक २ लोगों को प्रत्यक्ष दिखलाकर राज्य तथा प्रजाओं से बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त की। कुछ समय के बाद श्रीमान् महाराणाजी साहब सज्जनसिंहजी ने राज्यासन को सुशोभित किया। उनके समय भी पू० शास्त्रीजी का पूर्ववत् क्रम बराबर चलता रहा। श्रीमान् महाराणाजी साहब भी विद्या के पूर्ण अनुरागी थे। उन्होंने भी इनको उसी प्रतिष्ठा से रखा। उनके राज्यसमय में उत्तम २ विद्वन्मण्डली आश्रित हुई। श्रीमान् महाराणाजीसाहब की राज्यसभा में पण्डित मण्डली की शोभा श्रीविक्रमादित्य के सभा के समान मालुम होती थी। नित्य नवीन २ शास्त्रीयचर्चा होती रही। देशदेशान्तरों से राजदर्शनार्थ पण्डित लोग आया करते थे। उनकी यथोचित परीक्षा लेकर यथायोग्य संमान भी किया जाता था। ऐसे समय पू० शास्त्रीजी के सम्बन्धि एक दाक्षिणात्य विद्वान् ब्राह्मण नीमडी राज्य से उदयपुर आये। उनका नाम रामचन्द्रशास्त्री था। पू० शास्त्रीजी ने राजसभा में उनका प्रवेश करा दिया। उनकी उत्तम विद्वत्ता होने के कारण वे श्रीमान् महाराणाजी साहब के तरफ से आश्रित भी हुवे। पू० शास्त्रीजी और इनका एक ही स्थानमें निवास होने लगा। पू० शास्त्रीजीका पं० नारायणदेवशास्त्रीजी, पं० जगन्नाथशास्त्रीजी तथा पं० गोपीनाथशास्त्रीजी प्रभृति विद्वमण्डली के साथ स्नेहसंबन्ध घनिष्ठ था। इस प्रकार ११ वर्ष तक अर्थात् अपनी ३३ वर्ष की अवस्था तक राजसेवा करने पर काशीजी से पू० शास्त्रीजी को यह खबर आई कि पिताजी बहुत बीमार हैं भेट करना हो शीघ्र आना। यह खबर पाते ही पू० शास्त्रीजी श्रीमान् महाराणाजी साहब की आज्ञा प्राप्त कर श्रीकाशीजी रवाना हुवे। घर पहुंचने पर सुना कि पूज्य पिताजी तथा गुरुवर बालशास्त्रीजी को कैलासवास हुआ। पू० शास्त्रीजीको पिताजी तथा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गुरुवर इन दोनों का सहसा वियोग होने से बहुत असह्य दुःख हुआ। उस समय इनको केवल एक बन्धु तथा एक भगिनी विद्यमान थीं। क्योंकि इसके पूर्व ही ज्येष्ठबन्धु बाबाशास्त्री और एक भगिनी का देहान्त हो चुका था। विद्यमान भगिनी ने पू० शास्त्रीजी को बहुत सान्त्वन दिलाया। पू० शास्त्रीजी स्वयं विद्वान् ही थे। क्रम २ से धैर्य धारण करके कुछ समय काशीजी में निवास कर कुछ स्वस्थ चित्त हुवे। उपरान्त श्रीमान् महाराणाजी साहब सज्जनसिंहजी की सेवा में कुटुम्बसहित उदयपुर गये। उस समय श्रीमान् महाराणाजी साहब की सभा में कर्मान्त्रीजी अ-मृतरामजी नामक एक वहां के ही विद्वान् पुरुष थे। उनका कार्य श्रीमान् महाराणाजी साहब के नित्यानुष्ठान स्नान सन्ध्यादि के समय उपस्थित रहने का था। उनसे तथा पू० शास्त्रीजी से परस्पर धनिष्ठ स्नेहसंबन्ध था। उनको निज के अनेक मकान थे। उन्होंने अपना एक मकान दक्षिणा सहित पू० शास्त्रीजी को दान कर दिया। उस समय से पू० शास्त्रीजी उसी मकान में निवास करने लगे। कुछ समय के उपरान्त अर्थात् पू० शा-स्त्रीजी की ३५ वर्ष की अवस्था में वर्तमान श्रीमान् महाराणाजी साहब फतहसिंहजी ने राज्यासन को सुशोभित किया। महाराणाजी साहब बड़े दयालु हैं। समस्त संसार में आपकी योग्यता प्रकट है। आप बडे उत्साही तथा शूर हैं। प्रजापालन अपना कर्तव्य समझते हैं। ब्रह्मचर्य व्रत में दृढ हैं। बुद्धिमान हैं। आप ने इन्द्रियों को अपने आधीन रखा है। गो ब्राह्मण का पालन करना आप अपना धर्म समझते हैं। आप सज्जनों के प्रेमी हैं। आलस्य से रहित है। बडे दानी हैं। क्लेशों को सहन करने की शक्ति रखते हैं। सर्वदा उत्तम २ कर्म करते हैं। आस्तिकों में श्रेष्ठ हैं। पण्डितों के भक्त हैं। और सत्यप्रतिज्ञ हैं। ऐसे अनेक गुणों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

से युक्त श्रीमान् महाराणाजी साहब हैं। श्रीमान् महाराणाजी साहब ने भी पू० शास्त्रीजी का पूर्ववत् ही संमान रखा। आपके समय में भी पू० शास्त्रीजी ने पाठशालाक्रम तथा अपने घर के आर्यविद्यालय पाठशाला का भी क्रम अखण्डरूप में चलाया। श्रीमान् महाराणाजी साहब के राज्याभिषेक का मुहूर्त पू० शास्त्री जी ने ही बतलाया था और अच्छे २ कर्मकाण्डी द्वारा राज्याभिषेकोत्सव भी कराया था। और राज्याभिषेक के उपरान्त मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्र के ग्रन्थ तथा राजनीति श्रीमान् महाराणाजी साहब को सुनाते थे। पू० शास्त्रीजी को ३६ वर्ष की अवस्था में द्वितीयपुत्र हुआ जो "इस पवित्र चरित्र का लेखक" है। पू० शास्त्रीजी ने श्रीमान् महाराणाजी साहब की आज्ञा से कई स्थान में सूक्ष्मकाल दर्शक धूपघडी के अनेक यन्त्र बनाये। जो यन्त्र आजतक सूर्यके उष्णद्वारा ठीक २ समय बतला रहे हैं। और इन्होंने धर्म की आपत्ति पड़ने पर धर्मशास्त्र की व्यवस्थाएँ करके राजा तथा प्रजाओं की बहुत सहायता की थी। किसी समय लोगों को कर्तव्याकर्तव्यका सन्देह उपस्थित होता था तब लोग इनको आकर पूछते थे। तब पू० शास्त्रीजी सभों को यथोचित उत्तर देकर सन्तुष्ट करते थे ऐसे अवसर पर लोगों ने इनको 'सदसद्विवेकी' इस उपाधि से विभूषित किया था। लोग अनेक प्रकार की सभाएँ करते थे और इनको सभापति बनाते थे। एकसमय इस राज्य में अनावृष्टि के कारण लोगों में हाहाकार मचा था उस समय इन्होंने श्रीमान् महाराणाजी साहब की आज्ञा से एक अनुष्ठान द्वारा उत्तम वृष्टि कराई थी। उस समय पू० शास्त्रीजी ने 'यागनाथाष्टक' नामक एक स्तोत्र बनाकर प्रकाशित करके लोगों को उपहार किया था। इस राज्य के मन्त्री पद पर बहुत समय से श्रीमान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

महताजी पन्नालालजी महोदय थे। गवर्नमेण्ट ने उनकी योग्यता समझ कर उनको सी. आई. ई. की खिताब से विभूषित भी किया था। उन्होंने इस राज्य को बहुत उन्नति की थी। समय २ पर उन्होंने इस राज्य को आपत्तियों से बचा कर राज्य को शोभ तथा प्रतिष्ठा बढाई थीं। पू० शास्त्रीजी के ऊपर उनका स्वाभाविक प्रेम था। उनके पुत्र वैसे ही गुणी और बुद्धिमान् विद्वान् गुणग्राहक श्रीमान् महताजी फतहलालजी हैं। इनका भी पू० शास्त्रीजीके ऊपर परंपरागत शुद्ध प्रेम था। पू० शास्त्रीजी ने पूर्व में अपने घर पर जो आर्यविद्यालय नामक पाठशाला स्थापन की थी उसीको हिन्दी के एक प्रधान कवि श्रीहरिश्चन्द्रजी के स्मारक में 'श्रीहरिश्चन्द्रार्यविद्यालय' नाम में परिवर्तित कर उसका सर्व कार्यभार श्रीमान् महताजी फतहलालजी के सुपुर्द कर दिया। आज यह विद्यालय इन्हीं महोदय के निरीक्षण में रहते हुए प्रतिदिन अपनी उन्नति कर रहा है। श्रीमान् महताजी फतहलालजी के उपकार हमलोगों पर असंख्य हैं। उनको इस शरीर से हमलोग कभी नहीं भूल सकते। इस राज्य के पुरोहित श्रीमान् शंभूनाथजी महोदय हैं इन्होने पू० शास्त्रीजी के पास ज्योतिष गणिततन्त्रका पूर्ण अभ्यास करके आज ऐसी योग्यता प्राप्त करली है कि पू० शास्त्रीजी के अभाव में भी गणित संबन्धि ज्योतिष का संपूर्ण कार्य उन्हीं के समान करते हुए राज्य में पू० शास्त्रीजी की विद्यमानता ही प्रकट कर रहे हैं। अपने बन्धु लोगों के साथ इनका भी प्रेम आजतक पू० शास्त्रीजी के घराने पर उसीतरह है। पू० शास्त्रीजी ''दिनचर्या' नामक हिन्दी का एक मासिक पुस्तक प्रकाशित करते थे। उसमें उत्तमोत्तम उपदेश पर तथा धार्मिक लेख स्वयं लिखकर लोकोपकार करते थे। समय २ पर अन्यान्य समचारपत्रों तथा मासिकपत्रों में भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लेख देते थे। उससमय पू० शास्त्रीजीने 'वारकुञ्चिका' नामक एक यंत्री बनाकर प्रकाशित की। जिससे अनन्त वर्षों तक आगे वा पीछे अंग्रेजी इष्ट तारीख को अभीष्ट वार समझ सकते हैं। तथा इन्होंने एकादशीनिर्णय नामक एक छोटा धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ भी बनाकर प्रकाशित किया। जिससे उत्तमनिर्णय एकादशी आदि व्रतों का सरलता से हो सकता है। उस समय एक सुयोग्य बुद्धिमान् धर्मिष्ठ विद्वभक्त गुणग्राहक महोदय थे जिनका नाम मुखियाजी नवलसिंहजी था। पू० शास्त्रीजी का और उनका परस्पर घनिष्ठ शुद्ध प्रेम था। मुखियाजी साहब के मकान पर पू० शास्त्रीजी स्वयं जाया करते थे। और पहरों तक उनके साथ शास्त्रीय वार्तालाप किया करते थे। उनका स्थान बहुत रमणीय होने से कभी २ कई दिनों तक उन्हींके स्थान में निवास भी करते थे। परस्पर सन्तानों में आजतक उसीप्रकार प्रेमसंबन्ध पूर्णरूप से निभरहा है। इसप्रकार पू० शास्त्री जी ने इस राज्य में रहकर श्रीमान् तीनों महाराणाजी साहब महोदय की यथाविधि सेवा करके प्रतिदिन राज्य से तथा प्रजा से बढता हुआ अपना संमान प्राप्त करते हुए अच्छे शिक्षण तथा उत्तम विद्यादान द्वारा लोगों का बहुत उपकार किया है। जिससे आज उस मेवाड प्रान्त में प्राणिमात्र पू० शास्त्रीजी के उपकार को मान रहा है। इस प्रकार इन्होंने १८ वर्ष तक अर्थात् अपनी ४० वर्ष की अवस्था तक उदयपुर राजधानी में निवास कर राजकीय पाठशालाकार्य तथा अपने गृह के पाठशाला का कार्य तथा नित्य नवीन २ विषयों का आविष्कार इत्यादि अपना कर्तव्यकर्म अखण्डित रखा था। ठीक ही है महानुभाव ऐसे ही दृढसंकल्पी होते हैं। उपरान्त पू० शास्त्रीजी के मन में काशीनिवास गङ्गास्नान तथा विश्वेश्वरदर्शन की

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अत्युत्कट इच्छा हुई। तब उन्होंने पाठशालीयकार्य सुखपूर्वक छोड़ कर श्रीमान् महाराणाजी साहब की आज्ञा प्राप्त कर सकुटुम्ब श्रीकाशीजी आये। काशी में आकर नित्य गङ्गास्नान तथा श्रीविश्वेश्वरादि देवदर्शन करके यथाशक्ति गायत्रीजप करते थे। पू० शास्त्रीजी की ४१ वर्ष की अवस्था में गुरुवर श्री पू० बापूदेवशास्त्रीजी का स्वर्गवास हुआ जिससे उनको अतिशय दुःख हुवा। श्रीपूज्य बापूदेवशास्त्रीजी दृग्गणितानुसारि नवीन गणित से पंचाङ्ग निर्माण कर कई वर्षों से प्रकाशित करते रहे। अनन्तर गुरुवर के अभाव में उस पंचाङ्ग का सर्वभार पू० शास्त्रीजी को अपने तरफ लेना पड़ा। श्री पूज्य गुरुवर के बतलाए हुए प्रकारों से पू० शास्त्रीजी अपने सतीर्थ्य पं० चन्द्रदेवजी तथा महादेवशास्त्री तथा गणपतिजी सारस्वत तथा रामकृष्णशास्त्रीजी प्रभृति महोदयों के साथ गुरुवर का पंचाङ्ग निर्माण कर प्रकाशित करते रहे। उससमय पू० शास्त्री जी ने 'पाखण्डविडम्बन' नामक एक पुस्तक निर्माण करके भाषाटीका सहित प्रकाशित किया था। पू० शास्त्रीजी ने अपनी ४२ वर्ष की अवस्था में अपने पूज्य पिता तथा माताजी को त्रिस्थली यात्रा की। और जगदीशधाम की यात्रा तथा गङ्गासागर की यात्रा भी की। इसीसमय पू० शास्त्रीजी के प्रिय सतीर्थ्य पं० चन्द्रदेवजी ने सिद्धान्तशिरोमणि नामक ज्योतिष गणितस्कंध का एक ग्रन्थ छपाया। उसका संशोधनकार्य तथा नवीन२ चमत्कारिक विषय निर्माण कर उस ग्रन्थ में संग्रह करने का कार्य भी पू० शास्त्रीजी को करना पड़ा था। श्रीकाशीजी में दुर्गाकुण्ड पर एक पाठशाला थी जिसमें ज्योतिषशास्त्र के अध्यापक की आवश्यकता थी। वहां के अध्यक्ष महोदय ने इस कार्य के लिये पू० शास्त्रीजी से प्रार्थना की। तब उन्होंने अपने संसार के निर्वाह के लिये काशीजी में वह सामान्य आश्रय भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अच्छा समझकर तथा विद्योन्नति अपना कर्तव्य जानकर उस पाठशालीय कार्य को स्वीकार किया। उनको प्रातःकाल सूर्योदय समय से एक प्रहरमात्र वह कार्य करना पड़ता था। उस पाठशाला में भी उन्होंने बहुत विद्यार्थिगणों का उपकार किया। उस समय अपने सतीर्थ्य प० चन्द्रदेवजी के साथ 'ग्रहातुल्य' नामक सिद्धान्त ग्रन्थ पर उन्होंने उपपत्ति लिखी। वह ग्रन्थ अभीतक प्रकाशित नहीं हुआ है। इसप्रकार ४३ वर्ष तक पू०शास्त्रीजी का समय व्यतीत हुवा। उससमय अर्थात् ४४ वर्ष के आरंभ में उदयपुर राज्य के माण्डलिक राजासाहब ठिकाना बीजोलियाँ (विन्ध्यवल्ली) नरेश श्रीमान् राव सवाई गोविन्दसिंहजी महोदय बीजोलियाँ नगर के राज्यासन पर बिराजते थे। उनके पुत्र श्रीमान् कृष्णसिंहजी महोदय युवराज पद पर थे। श्रीमान् गोविन्दसिंहजी से श्रीमान् महताजी फतहलालजी का विशेष स्नेहसंबन्ध था। पूर्व में सूचित कर आए हैं कि श्रीमान् महताजी फतहलालजी का पू० शास्त्रीजी से पूर्ण स्नेह था। श्रीमान् गोविन्दसिंहजी को अपने राज्य में पाठशाला स्थापन द्वारा विद्योन्नति कराने की तथा अपनी राज्यसभा में सभा की शोभा बढ़ाने के लिये एक उत्तम विद्वान् की आवश्यकता हुई। इस विचार को श्रीमान् महताजी फतहलालजी के साथ उन्होंने प्रकट करके निश्चय कर पू० शास्त्रीजी से प्रार्थना की। पू० शास्त्रीजी को काशी छोड़कर परदेश में जाना अभीष्ट नहीं था। परन्तु अन्न जल की प्रबलता के कारण तथा पूर्वोक्त दोनों महानुभावों के विशेष आग्रह से उन्होंने स्वीकार किया और सकुटुम्ब बीजोलियाँ गये। उससमय बीजोलियाँ जाने के लिये भीलवाड़ा स्टेशन तक रेलवे थी। वहां से २२ कोस बैलगाड़ी घोड़ा ऊँट आदि सवारी द्वारा जाना पड़ता था। अब कोटा स्टेशन तक भी रेलवे है। वहां से १६ कोस उसी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रकार सवारी से जाना पड़ता हैं। नीमच स्टेसन तक भी रेलवे है वहां से घोड़ागाड़ी द्वारा या मोटर द्वारा सिंगोली तक जाकर वहां से ७ कोस उसीप्रकार सवारी से जाना पड़ता है। पू० शास्त्रीजी बीजोलियाँ में प्रायः सकुटुम्ब रहते थे किसी समय काशीजी में विशेषकार्य रहने पर कुटुम्बमण्डली को पहुंचाकर अकेले भी रहते थे। बीजोलियाँ ग्राम बहुत छोटा है तथापि उसमें मनुष्यों की वस्ती पूर्ण है। पर्वतों के अधित्यका (उपरकी) भूमि पर विराजमान हैं। ग्रामं के चारों तरफ बहुत ऊंचा तथा चौड़ा और मजबूत तथा सुन्दर कोट बना हुआ है। कोट के बुर्जों पर तोफें रखी हैं। शहर में आंने के लिये दो द्वार हैं। द्वारों पर पहरा हैं। शहर के योग्यतानुसार बाजार तथा सड़कें हैं। शहर के मध्यभाग में सुन्दर राजमहल है। शहर के बाहरी द्रश्य में एक सुन्दर नदी तथा कृष्णसागर नाम का एक बड़ा तालाब हैं। जिस तालाब को श्रीमान् राव सवाई कृष्णसिंहजी ने दुर्भिक्ष के समय में बनवाकर प्रजाओं का रक्षण किया था। उस तालाब के ऊपर श्री विन्ध्यवासिनी माताजी का एक प्राचीन स्थान है। उन माताजी को इस नगर की देवता मानते हैं। और वहां पर कुंड बावड़ी बगीचा देवमन्दिर आदि स्थान की शोभा बढ़ाते हैं। जल की वहां-पर परिपूर्णता है। सारांश वह स्थान तपोभूमि के समान है। वहां के महाराज अग्निवंशी प्रमरकुलभूषण वीर क्षत्रिय हैं। श्रीमान् राव सवाई गोविन्दसिंहजी महाराज बड़े रसिक तथा विद्या के अनुरागी थे। उन्होंने एक पाठशाला स्थापन कर उसमें पू० शास्त्रीजी को नियुक्त कर उसके सर्वाधिकार उनके सुपुर्द कर उत्तम आश्रय कर दिया। पू० शास्त्रीजी ने अपने बुद्धिवैभव से पाठशाला के नियमादि ठीक २ कर उत्तम रूप से पाठनक्रम रखा। उससमय बीजोलियाँ की ऐसी स्थिति थी कि अक्षर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लिखना तथा बांचना जिसको आता हो वह विद्वान् कहा जाता था। सैंकडा ५ मनुष्य पढे हुए मिलते थे। ऐसी स्थिति में पू० शास्त्रीजी ने अपने पाठनक्रम के नियमानुसार परिश्रमपूर्वक विद्यार्थियों को तयार कर थोड़े ही समय में लोगों में विद्याभिरुचि उत्पन्न की। पू० शास्त्रीजी प्रतिदिन महाराज की सभा में उपस्थित होकर नित्य नवीन २ विषयों द्वारा महाराज का मनोरंजन करते थे। और महाराजकुमार साहब श्रीमान् कृष्णसिंहजी महोदय की सभा में भी प्रतिदिन जाते थे। महाराजकुमार साहब श्रीमान् कृष्णसिंहजी का पू० शास्त्रीजी के साथ शुद्ध प्रेम बहुत बढ़ गया। उन्होंने पू० शास्त्रीजी के पास राजनीति तथा धर्मविषय का पढ़ना शुरू किया। और महाराजकुमार साहब श्रीमान् कृष्णसिंहजी ने स्वकीय धर्मपत्नी की भी, पठन में अभिरुचि देखकर पढाने के लिये पू० शास्त्रीजी से प्रार्थना की। उन्होंने कथमपि स्वीकार करके पढ़ाना शुरू कर दिया। कुछ समय के बाद ही श्रीमान् राव सवाई कृष्णसिंहजी महाराज राज्यासन पर विराजे। महाराज साहब के गुणों का वर्णन जितना किया जाय थोडा ही होगा। महाराज साहब धर्म में दृढ़ राजनीति में कुशल बुद्धिमान् विद्या के पूर्ण अनुरागी दयालु आस्तिक प्रजाभक्त गौ तथा ब्राह्मण के प्रतिपालक और स्वयं विद्वान् थे। आश्रयदाता तथा आश्रित दोनों विद्वान् होने से अनायास से विद्योन्नति होती है। ऐसी ही उससमय की स्थिति रही। भूतपूर्व महाराज द्वारा जो पाठशाला स्थापित हुई थी वह पू० शास्त्रीजी के परिश्रम से बहुत थोड़े समय ही में उन्नति को प्राप्त हुई। नवीन २ नियम तथा अनेक परीक्षाएं बार २ होती थीं। उत्तीर्ण छात्रोंको स्वयं महाराज साहब अपने हाथों से यथोचित इनाम भी देते थे। उससे विद्यार्थिलोगों का उत्साह भी बढ़ता

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

था। उससमय महाराज साहब की आज्ञानुसार पू० शास्त्री जी ने उपनीत ब्राह्मणों के लिये ' यजुर्वेदीया त्रिकाल सन्ध्या ' का प्रयोग तयार कर प्रकाशित भी किया था। महाराज साहब क एक नियम ऐसा था कि जिस ब्राह्मण को सन्ध्या आती हो उसे ही अनुष्ठानआदि दिए जावें। इसकारण से उस समय आबाल वृद्ध ब्राह्मणमात्र में उस पुस्तक का बहुत प्रचार हुआ था। और सभी ब्राह्मण स्वकर्मनिष्ठ देखने में आते थे। वह पुस्तक महाराज साहब की तरफ से ब्राह्मणमात्र को दक्षिणा सहित उपहार की जाती थी। पू० शास्त्रीजो ने सपत्नीक महाराज साहब को थोड़े ही समय में उत्तम विद्वान् बना दिया। सपत्नीक महाराज साहब उन पर शुद्ध गुरुभक्ति रखते हुए उनको आज्ञा का उल्लंघन कभी नहीं करते थे। पू० शास्त्रीजी भी पूर्ण राजभक्त थे। मन वाणी शरीर से राज्य की उन्नति में सर्वदा तत्पर रहते थे। किसी एक समय श्रीमान् महाराजसाहब की प्रकृति अस्वस्थ हुई थी। उस समय उनके प्रकृति के सामने कुछ कालके लिये ठहरना मनुष्यमात्र को अत्यन्त कष्टप्रद होता था। ऐसे समय पू० शास्त्रीजी ने अपनी निद्रा क्षुधा आदि का त्याग कर अहर्निश महाराज साहब की सेवा में तत्पर रहना अपना कर्तव्य समझ लिया। बीजोलियाँ नगर में उत्तम वैद्य तथा डाकृर नहीं थे। सामान्य वैद्य तथा डाकृर थे उनसे उस मौके पर कुछ बन नहीं सका था। तब पू० शास्त्रीजो ने स्वयं अपनी कल्पनानुसार औषधियां तयार कर उपचार किया था। थोड़े ही समय में महाराज साहब ने पूर्ण आरोग्यता प्राप्त की। इत्यादि अनेक कार्य पू० शास्त्रीजो ने शुद्धबुद्धि से समय २ पर किये थे जिससे महाराज साहब राव सवाई श्रीमान् कृष्णसिंहजी की पू० शास्त्रीजी पर भक्ति तथा विश्वास बढ़गया था। उनदिनों में बीजोलियाँ

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ग्राम बडे २ नगरों के साथ विद्योन्नति में स्पर्धा करता था। साक्षात् श्रीकाशीजी यहां पर अपने रूपान्तर से विराजमान हैं ऐसा लोगों को मालूम होता था। पू० शास्त्रीजी बीजोलियाँ से बूंदी भैंसरोडगढ बेगूं कोटा आदि स्थानों में भी कार्यवश तथा नगरदर्शनार्थ भी जाया करते थे। सर्वत्र इनकी प्रतिष्ठा उत्तमोत्तम होती थी। श्रावणी के मौके पर प्रायः पू० शास्त्रीजी सिंगोली अवश्य जाते थे। वहांपर दाक्षिणात्य ब्राह्मणों की वस्ती है। वह नगर बीजोलियाँ से ७ कोस पर है। और श्रीमान् ग्वालियर महाराज के आधीन है। महाराज़ साहब की इच्छा से पू० शास्त्रीजी ने उससमय 'जानकीपरिणय' तथा 'रुक्मिणी हरण' ऐसे दो नाटक हिन्दी में लिखे थे। और उन दोनोंका अभिनय भी करा के महाराज साहब का मनोरंजन किया था। पू० शास्त्रीजी की ४६ वर्ष की अवस्था में उनके ज्येष्ठबन्धु रामभट्टजी का स्वर्गवास हुवा। तब पू० शास्त्रीजी को बहुत दुःख हुआ। उससमय केवल उनकी सहोदर ज्येष्ठभगिनी अकेली हीं रह गई थीं। उन्होंने उनको बहुत सान्त्वन दिलाया। थोड़े ही समय में अर्थात् ५ वर्ष की अवधि में किंवा अपनी ४८ वर्ष की अवस्थातक पू० शास्त्रीजी का इतना कार्य हुवा। इस अवधि में पू० शास्त्रीजी ने 'पंचाङ्गपाटी संग्रह' नामक ज्योतिष का नवीन ग्रन्थ संग्रह करके प्रकाशित किया। तथा संयुक्ताक्षरयोगसूत्र शब्दरूपावली धातुरूपावली भाषाटीका सहित लिखी। वह प्रकाशित नहीं हुई। उस समय उन्होंने एकादशीनिर्णय नामक धर्मशास्त्र का ग्रन्थ भी द्वितीयवार प्रकाशित किया। पू० शास्त्रीजी की ४९ वर्ष की अवस्था में दैवदुर्घटना से शास्त्रीजी के प्रथम पुत्र (चरित्रलेखक के ज्येष्ठबन्धु) का काशीवास हुआ। यह महादारुण दुःख पू० शास्त्रीजी को असह्य हुवा। उससमय वे श्रीमान् महाराजसाहब राव सवाई कृष्णसिंहजी की आज्ञा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लेकर काशी आ ये। और यहां पर ही रहने का निश्चय किया। काशीजी में पू० शास्त्रीजी को नियत आश्रय कुछ भी नहीं था। यथोपलब्धकार्यद्वारा केवल श्रीविश्वनाथजी के भरोसे उनका निर्वाह होता रहा। प्रारंभ में १ वर्ष तक अर्थात् अपनी ४९ वर्ष की अवस्था तक पू०शास्त्रीजी शोक से विरक्त होकर श्रीकाशीजी में हीं, अपना गृह त्याग कर अन्यत्र देवालयादि पुण्यस्थान में निवास कर त्रिकालस्नान, सन्ध्या गायत्रीजप गीतापाठ वेदान्तविचार आदि में अपना समय व्यतीत करते थे। इस एकवर्ष की अवधि में उन्होने नियमपूर्वक कृच्छ्र अतिकृच्छ्र प्राजापत्य चान्द्रायणादि अनेक व्रत किये। उससे उनके चित्त की बहुत कुछ शान्ति हुई। उससमय पू० शास्त्रीजी ने 'रेणुका-स्तोत्र' बनाकर अपनी कुलदेवता की स्तुति की। तब देवीजी की दया से चित्त की पूर्णरूप से स्वस्थता होकर फिर वे घर पर आकर रहने लगे। श्रीरेणुका माताजी को कृपा से ५० वर्ष की अवस्था में पू० शास्त्रीजी को तृतीयपुत्र हुवा। यह वर्तमान समय में साहित्यशास्त्र की आचार्यपरीक्षा में उत्तीर्ण होकर अपने ज्येष्ठ सहोदर (चरित्रलेखक) की पूर्ण सहायता करते हुए सर्वदा आज्ञा में विनीत भाव से रहता है। पुत्ररत्न के लाभ से पू० शास्त्री-जी का पूर्वोक्त शोक बहुत कुछ शान्त हुवा। और गृह पर ही रह कर अपना स्नानसन्ध्यादिकर्म यथावत् करते रहे। इस प्रकार पू० शास्त्रीजी की ५१ वर्ष की अवस्था का समय व्यतीत हुवा। बीजोलियाँ महाराज साहब ने इस अवधि में अपने ठिकाने पर पू० शास्त्रीजी को आने के लिये कईवार प्रार्थना की। पू० शास्त्रीजी ने बीजोलियाँ महाराज साहब के सन्तोषार्थ काशीस्थ एक अपने सुयोग्य शिष्य को बीजोलियाँ भेजा। उन्होंने १ वर्ष बीजोलियाँ निवास कर पाठशालीयकार्य तथा महाराज साहब श्रीमान् राव सवाई कृष्णसिंहजी का मनोरंजन यथामति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कियो। उपरान्त उनका चित्त वहां से विरक्त हुवा इसलिये वे वहाँ से काशी चले आये। उससमय बीजोलियाँ महाराज साहब ने पू० शास्त्रीजी को आने के लिये पुनः प्रार्थना की। तब उन्होंने उत्तर दिया कि किसी निमित्त पर आऊंगा तब कुछदिन रहूंगा। उपरान्त पू० शास्त्रीजी की ५३ वर्ष की अवस्था में काशीजी में अधिकमाससंबन्धि एक शास्त्रार्थ उपस्थित हुवा। काशीजी की बड़ी २ धुरन्धर ज्योतिषी पण्डितमण्डली प्रतिपक्ष में थी। श्रीपूज्य बापूदेवशास्त्रीजी का दृग्गणितानुसारि पंचाङ्ग, जो पू० शास्त्रीजी तथा उनकी सतीर्थ्य मण्डली द्वारा निर्माण होकर प्रतिवर्ष प्रकाशित होता रहा उसके अनुसार श्रावण ही अधिकमास आता था। और काशोस्थ ज्योतिषी पण्डित मण्डली द्वारा जो पंचाङ्ग निर्माण होकर प्रकाशित होता था उस मान से आषाढ़ अधिकमास आता था। पू० शास्त्रीजी का कथन यह था कि 'इनमण्डलान्त' मान जो प्राचीन ज्योतिषाचार्य ऋषियों द्वारा सर्वसंमति से स्वीकृत है उसका उपयोग ऐसे ही सन्धिसमय में ऐकमत्य करने के लिये ही हो सकता है अन्यथा वह मान निरर्थक होजायगा। काशीस्थ पंचाङ्ग जो प्रतिपक्षियों के थे उनमें भी इनमण्डलान्त मान के स्वीकार करने से श्रावण ही अधिकमास हो सकता था। इसप्रकार सर्वसंमति से ऐकमत्य होजाता। इनमण्डलान्त मान के विषय में पू० शास्त्रीजी ने उससमय 'अधिमास व्यवस्था' नामक एक व्यवस्था लिखकर प्रकाशित भी की थी। उस व्यवस्था का उत्तर दूसरे पक्षसे कुछ भी न मिला। काशीस्थ ज्योतिषी पण्डित मण्डली अपने आग्रह पर ही रही। उस समय पू० शास्त्रीजी का उन पण्डित मण्डली के साथ सभाओं द्वारा मौखिक तथा नोटिसों द्वारा लेखी बहुविध शास्त्रार्थ हुआ। पू० शास्त्रीजी ने "इनमण्डलान्त मान" को अनेकानेक प्रमाणों द्वारा सिद्ध कराकर ¾ लोक-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मत अपने पक्ष में कर दिखलाया। प्रायः सर्वत्र श्रावण ही अधिक मास माना गया। वे सत्य पक्ष का ही आश्रय करते थे। इसीलिये उनका सर्वत्र विजय होता था। पू० शास्त्रीजी ने ५४ वर्ष की अवस्था में अयोध्या मथुरा बद्रीनारायण तथा बद्रीकेदार की सकुटुम्ब यात्रा की। और ब्रह्मकपालक्षेत्र पर पिण्डदान करके पितृऋण से मुक्त हुवे। बीजोलियाँ से आने पर पू० शास्त्रीजी अपने घर पर ही पाठशाला स्थापित कर यथावकाश विद्यार्थियों को विद्यादान करते रहे। इसी अवधि में पू० गुरुवर बालशास्त्रीजी की पत्नी महोदया की इच्छा से कुछसमय तक पूज्य गुरुवर के स्थान में ही अपनी पाठशाला लेजाकर विद्यार्थियों को पढ़ाया था। उसीसमय बीजोलियाँ महाराजसाहब श्रीमान् रावसवाई कृष्णसिंह जी ने अपने कन्याविवाहोत्सव के उपलक्ष्य में पू० शास्त्रीजी को बीजोलियाँ आने के लिये पुनः प्रार्थना की। उससमय महाराज साहब का वचन स्वीकार कर पू० शास्त्रीजी,सकुटुम्ब बीजोलियाँ गये। विवाहोत्सव सानन्द संपन्न होने के उपरान्त महाराज साहब के आग्रह से देढ़वर्ष कुटुम्ब सहित वहां ही रहे। और महाराज साहब को प्रसन्न रखते हुए विद्यादानरूप अपना कर्तव्य करते थे। उससमय पू० शास्त्रीजी ने ज्योतिष विषयक ताजिक नीलकण्ठी नामक ग्रन्थ की "केका" नामक टीका लिखी। यह टीका अपूर्व हुई है। इसमें ग्रन्थ की सङ्गति प्रतिपद का तात्पर्य उपपत्ति उदाहरण तथा विशेषसंग्रह इत्यादि विषय लिखे हैं। संयोग से आजतक यह प्रकाशित नहीं हुई है। बीजोलियाँ में कृष्णसागर नामक तलाव के समीप एक प्राचीन श्रीहनुमानजी का स्थान और कुण्ड है। वहांपर पू० शास्त्रीजी अपनी शिष्यमण्डली के निमित्त व्यायामशाला बनाते थे। उस स्थान पर खोदने के समय भूमिगर्भ में एक शिवलिङ्ग दृष्टिगत हुवा। चारों तरफ की मट्टी हटाने पर उत्तम अखण्डित शिवलिङ्ग प्रकट हुवा। पू०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शास्त्रीजी ने वहां पर मन्दिर बनवाकर श्रीविन्ध्येश्वर उनका नाम रक्खा। उपरान्त नगर में अपने निवास के लिये श्रीमहाराजसाहब से कुछ भूमि प्राप्त कर एक मकान बनवाया। परन्तु अनेक उपाधियों के कारण वह मकान पूरा बन नहीं सका। अभीतक वह अधूरा बना हुआ मकान 'पण्डितजी महाराज का मकान' इस नाम से लोगों में प्रसिद्ध है। पू० शास्त्रीजी ने पूर्वसमय में लोगों में विद्यानुराग उत्पन्न करके बहुत कुछ उन्नति की ही थी। जो कुछ अवशिष्ट थी वह उससमय पूर्ण की। इन दिनों में इस छोटे से ग्राम में भी उत्तमोत्तम विद्वान् तथा व्याख्यानदाता तयार होकर पू० शास्त्रीजी के नामको बढ़ाते हुए इस नगर की शोभा बढ़ा रहे हैं। इसप्रकार पूर्ण उन्नति करके महाराज साहब श्रीमान् राव सवाई कृष्णसिंहजी की आज्ञा प्राप्त कर वे सकुटुम्ब काशी आये। पू० शास्त्रीजी की ५७ वर्ष की अवस्था में श्रीमान् राव सवाई कृष्णसिंहजी महाराज का स्वर्गवास हुआ उससे उनको अतिशय दुःख हुवा। आगे मुम्बई में 'पंचाङ्गशोधन सभा' नामक ज्योतिषी विद्वान् मण्डली की एक बडी सभा हुई। वहांपर देश देशान्तरों से ज्यौतिष विद्वान् मण्डली एकत्रित हुई थी। श्रीकाशीजी के प्रधान रईस श्रीमान् वेदसंरक्षक राजासाहब मुनशी माधवलालजी सी. एस. आई महोदय के द्वारा यहां की ज्योतिष विद्वान् मण्डली को निमन्त्रण था। इन्होंने यहां से और ज्योतिष विद्वान् मण्डली के साथ पू० शास्त्रीजी को मुम्बई के सभा में भेजा था। वहां पर सभापति श्रीद्वारिकापीठस्थ जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीमाधवतीर्थ स्वामि महाराज हुए थे। सभा में प्रश्नोत्तर पूर्वक बहुविध शास्त्रार्थ हुवा। लोकमान्य श्रीमान् बाल गंगाधर तिलक महोदय ने ज्योतिष सम्बन्धि अनेकानेक विचित्र २ प्रश्न किये। कुछ काल तक सभा स्तब्ध थी। ऐसा देखकर पू० शास्त्रीजी ने उठकर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उनके सब प्रश्नों का उत्तर देना शुरू किया। और आनुपूर्वि सब प्रश्नों का यथायोग्य उत्तर शास्त्रानुसार तत्काल दिया। लोकमान्य श्रीमान् बाल गंगाधर तिलक महोदय तथा श्रीजगद्गुरु स्वामि शङ्कराचार्य महाराज तथा सभास्थित संपूर्ण विद्वन्मण्डली पू० शास्त्रीजी की विद्वत्ता से अत्यन्तसन्तुष्ट हुई। उससमय श्रीजगद्गुरु स्वामि शङ्काचार्य महोदय ने पू० शास्त्रीजी को "स्वधर्म धुरन्धर दैवज्ञ वाचस्पति" इस पदवी से विभूषित कर एक उत्तम दुशाला जरीका देकर संमानित किया। पू० शास्त्रीजी ने कुछ काल तक वहां निवास कर पंचाङ्ग संबन्धि सब नियम बनाकर 'निर्णयोपक्रम' नाम से प्रकाशित किये। इस प्रकार उस सभा का सम्पूर्ण कार्य कर भूतपूर्व महाराज बीजोलियाँ नरेश महोदय के शोकनिमित्त बीजोलियाँ जाकर महाराज साहब के कुटुम्ब को तथा प्रजाओं को सान्त्वन दिलाकर फिर वे काशीजी आये। उपरान्त ५८ वर्ष की अवस्था में श्रीकाशीजी के प्रधान रईस श्रीमान् वेदसंरक्षक राजासाहब मुनशी माधवलालजी सी. एस. आई. महोदय ने पू०शास्त्रीजी को उत्तम आश्रय देकर श्रौताधान पूर्वक अग्निहोत्र दिलाया। श्रीकाशीजी से पश्चिम ३ कोस पर पंचक्रोशात्मक श्रीकाशीक्षेत्र के भीतर भुलनपुर (बालापुर) नामक एक स्थान है जिसको श्रीमान् राजासाहबने बनाया है। वहां पर एक सुंदर बगीचा और कोठी है। और वहां पर श्रीमान् राजासाहब ने बालात्रिपुरसुन्दरी देवीजी की मूर्त्ति चरस्थापना विधि से स्थापना की है। और भगवतीजी की सेवाके लिये एक दाक्षिणात्य कुटुम्बी ब्राह्मण को आश्रय देकर रखा है। समय २ पर बराबर राजोपचारों से श्रीभगवतीजी की सेवा होती है। और उसी मन्दिर के पास श्रीमान् राजासाहब ने बालातीर्थ नामक निर्मल जल से भरा हुआ एक बड़ा तालाब बनाया है। और लोगों के सुभीते के लिये वहां पर बहुत उत्तम २ स्थान बनाए

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हैं। और श्रीमान् राजासाहब के कहने से बी.एन. डब्ल्यू. रेलवे का 'बालापुर' नामक एक स्टेशन भी बना है। श्रीमान् वेदसंरक्षक राजासाहब मुनशी माधवलालजी सी.एस. आई महोदय धर्म के साक्षात् अवतार हैं। धर्म के बल से ही आज ८५ वर्ष की अवस्था में विराजमान हैं। आजतक श्रीमान् राजासाहब ने चातुर्मास्य, सोम आदि अनेक यज्ञ ब्राह्मण द्वारा कराए हैं। और श्रीमान् राजा साहब ने स्वयं भी अग्निहोत्र स्वीकार कर कुछ समय तक अग्निनारायण की सेवा की है। पत्नी का अभाव होने पर श्रीमान् राजासाहब अग्निनारायण की सेवा से वंचित हुवे। और श्रीमान् राजासाहब ने बड़े २ महादान भी किये हैं। और बहुत दीन गरीब ब्राह्मणों को आश्रय देकर सुखी भी किया है। और श्रीमान् राजासाहब ने राजकीय बड़े बड़े स्थानों पर काम भी किया है जिससे गवर्नमेण्ट से उत्तम पेन्सिल भी आप पारहे हैं। गवर्नमेण्ट आपकी बहुत इज्जत करती है जिसका प्रमाण यह है कि आपको 'राजा' तथा 'सी. एस. आई.' की खिताब प्रेमपूर्वक दी है। आप अपना स्नान-सन्ध्यादि नित्यानुष्ठान इस वृद्धावस्था में भी बराबर नियम से कर रहे हैं। आपको वेद पर तथा वैदिक कर्मोंपर पूर्ण श्रद्धा है। श्रीमान् राजासाहब पण्डितों के भक्त तथा विद्या के पूर्ण प्रेमी हैं। और स्वयं विद्वान् भी हैं। गुणों के समुद्र श्रीमान् राजासाहब के गुणों का वर्णन मैं मन्दमति कहां तक कर सकता हूं। इस घोर कलिकाल में श्रीमान् धर्म के स्तंभ हैं। यही समझकर काशीस्थ उत्तम २ ब्राह्मण पण्डित मण्डली ने चारों वेदों के रक्षण का भार आपके स्वाधीन कर आपको 'वेद-संरक्षक' पदवी प्रदान की है। ऐसे महानुभाव पुरुष इससमय पृथ्वी की शोभा बढ़ा रहे हैं। श्रीपरमेश्वर आपको सौ वर्ष का पूर्ण आयुष्य देकर कुछ काल तक इसीतरह पृथ्वी की शोभा तथा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बहुत लोगों का आश्रय बनाएँ रखें। श्रीमान् राजासाहब से अग्नि-होत्र तथा आश्रय पाकर प्रातः सायं होम करते हुए पू० शास्त्रीजी श्रीबालापुर में ही निवास करते रहे। किसी २ समय कार्यवश काशीजी में घर पर भी रहते थे। तथा पर्व दिनों में दर्शपौर्ण-मासेष्टि तथा विशेष समय पर विशेष इष्टि तथा इष्टि दिन में यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन आदि अग्निहोत्र कर्म साङ्गोपाङ्ग करते रहे। और स्वकीय स्नानसन्ध्यादि नित्यानुष्ठान तथा यथाव-काश विद्यार्थियों को विद्यादान भी करते हुए धर्मकार्य में अपना समय व्यतीत करते थे। उससमय पू० शास्त्रीजी ने 'ईशावास्य' नामक उपनिषद् की भाषा टीका बनाकर उस-को मूलसहित प्रकाशित किया है। और 'लघुपाराशरी' नामक ज्योतिष के बहुत उपयोगी ग्रन्थ की टीका बना कर उसे भी मूल सहित प्रकाशित किया है। यह ग्रन्थ ज्योतिष के फलादेश के लिये सर्वमान्य शिरोमणि रूप है। परन्तु अतिक्लिष्ट होने से विद्यार्थियों को बहुत कष्टप्रद होता था। जिसका अक्षरशः सङ्गति पूर्वक उद्धार किया है। उससमय ठाकुरदास गुप्त नामक एक महाशय ने 'स्वार्थान्धप्रकाशिका' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की थी जिसका मुख्य ध्येय ब्राह्मण द्वेष था। उसका अक्षरशः खण्डन 'निरङ्कुश कशा' नामक ग्रन्थ पू० शास्त्री जी ने लिख कर तैयार किया था। संयोग से वह छपा नहीं। और 'वधूवरों के घटित का विचार' नामक एक छोटा ग्रन्थ निर्माण कर सटीक सोदाहरण सारणीसहित पू० शास्त्रीजी ने लिख कर तयार किया था। वह भी छपा नहीं। तथा 'पंचपक्षी' नामक ज्योतिषग्रंन्थकी मार्मिकटीका भी पू० शास्त्रीजी ने लिखी थी। वह भी छपी नहीं। तथा पू० शास्त्रीजी ने आपस्तम्बीय श्रावणीप्रयोग और वैश्वदेव बलिहरण प्रयोग भी लिखे थे। वे भी छपे नहीं। ऐसे समय अग्निहोत्र कर्म करते रहते

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पू० शास्त्रीजी को श्रौत विषय कीं अभिरुचि उत्पन्न होकर अनेकानेक उस विषय के ग्रन्थ का अवलोकन करते रहे और श्रौतीय पण्डितों से प्रश्नोत्तर भी कर वे अपनी शंकाएं मिटाते थे। इस तरह पू० शास्त्रीजी ने श्रौतविषय में भीं अपना अभ्यास बढ़ाकर दर्शपूर्णमास याजुष हौत्र, तथा आग्नीध्र और ब्रह्मत्व प्रयोग स्थालीपाक आग्रयणेष्टिआध्वर्यव पावमानेष्टिहौत्र, पशुबन्धयाजुषहौत्र चातुर्मास्य पशु अग्निष्टोमपद्धति प्रभृति अनेक श्रौतशास्त्रीय ग्रन्थ लिखकर उन २ विषयों को स्पष्ट करके रखा है। पू० शास्त्रीजी को अपनी ५९ वर्ष की अवस्था में दक्षिण प्रान्तस्थ कोल्हापुर राजधानी के श्रीमान् महाराज साहब के तरफ से कन्याविवाहोत्सव निमित्त निमन्त्रण आया। उन्होंने अपने अनुष्ठान में बाधा समझकर एकवार अस्वीकार किया। परन्तु श्रीमान् महाराज साहब के तरफ से अत्यन्त आग्रह के कारण उनको जानापड़ा। काशीस्थ और विद्वान् मण्डली भी साथ में थी। विवाहोत्सव में श्रीमान् महाराजा साहब ने इनका बहुत सांमान किया। और विदागी के समय उत्तम वस्त्र तथा दक्षिणादिसे सर्व पण्डित मण्डली के साथ पू०शास्त्रीजी को बहुत सन्तुष्ट किया। विवाहोत्सव निवृत्त होने पर पू० शास्त्रीजीने उस देशस्थ (करवीरप्रान्तस्थ) जगद्गुरु स्वामि श्रीशङ्कराचार्य महाराज के दर्शन किये। और अपनी विद्या तथा गुणों का स्वामिमहाराज को पूर्णतया परिचय दिया। श्रीमान् जगद्गुरु स्वामि शङ्कराचार्य महाराज ने प्रसन्न होकर पू० शास्त्रीजी को "ज्योतिष्पारदृश्वा" इस उपाधि से विभूषित करके उत्तम वस्त्र तथा दक्षिणादि से संमानित किया। उपरान्त सर्व पण्डित मण्डली के साथ पू० शास्त्रीजी काशी आये। इस समय काशीजी में गुजरात प्रान्त से स्वामिनारायणमतानुयायि मण्डली आई थी। और अपना मत वैदिक सिद्ध करने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

के लिये काशीस्थ पण्डितमण्डली को शिक्षापत्री नामक अपना धर्मपुस्तक बतलाकर वस्त्र दक्षिणा आदि बांटकर बहुत पण्डितों से अपने मत के अनुकूल हस्ताक्षर करा लिये थे। वह मण्डली पू० शास्त्रीजी के पास भी आई। और इनको अपना धर्मपुस्तक दिखाकर संमति के लिये विशिष्टरूप द्रव्य का प्रलोभन भी दिया। परन्तु पू० शास्त्रीजी साधारण पुरुष तो नहीं थे। धर्म के स्तंभ थे। यही समझकर तो श्रीमान् जगद्गुरु स्वामि शङ्कराचार्य महाराज ने स्वधर्मधुरन्धर इत्यादि पदवी से आपको विभूषित किया था। पू० शास्त्रीजी ने स्पष्ट कहा कि इस धर्म-पुस्तक के तत्व अवैदिक हैं। लोगोंको धोका देने वाला स्वोक्ति विरोध से भरा हुआ यह धर्मपुस्तक आडम्बर मात्र है। मैं इस धर्मपुस्तक का अक्षरशः खण्डन करूंगा। तब वह मण्डली उन से रुष्ट होकर विदा हुई। और काशीस्थ पण्डितमण्डली में झगड़ा उत्पन्न कर अपने देश को गई। पूर्व में गुजरात प्रान्त में इस मत का घोर विरोध हुआ था। द्वारका पीठस्थ श्रीजगद्गुरु स्वामि शङ्कराचार्य महाराज भी इस मतके खण्डन पक्ष में ही थे। यही सोचकर वह मण्डली काशी में आई थी। परन्तु यहां पर भी कृतकार्य न हुई। काशी में उस मत संबन्धि झगडा उत्पन्न हो हीं गया था। श्रीमान् जगद्गुरुस्वामि शङ्कराचार्य महाराज की आज्ञा से तथा अपना कर्तव्य समझ कर पू० शास्त्रीजी उस मत के खण्डन में प्रवृत्त हुवे। पू० शास्त्रीजी का यहां के पण्डित मण्डली के साथ लेखो शास्त्रार्थ बहुत हुआ दो चार बार सभा करके व्याख्यानादि द्वारा भी शास्त्रार्थ हुआ था। अन्त में पू० शास्त्रीजी ने अपने पूर्वोक्त वाक्यानुसार उनके शिक्षापत्री नामक धर्मपुस्तक का अक्षरशः खण्डन करके 'शिक्षापत्रीध्वान्तभास्कर' इस नाम से पुस्तक लिखकर प्रकाशित भी किया। उसका उत्तर आजतक प्रतिपक्ष

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

से मिला ही नहीं। इस तरह उस समय पू० शास्त्रीजी ने विजय प्राप्त की। उपरान्त ६० वर्ष की अवस्था में पू० शास्त्रीजी जी की सहोदर ज्येष्ठ भगिनी जो एक हीं अवशिष्ट थीं उन्होंने भी स्वर्गवास किया। तब अपने को पूज्य छत्ररूप कोई नहीं रहने से वे निराधर होकर बहुत दुःखी हुवे। परन्तु बुद्धिमान् थे इस कारण धैर्य धारण कर अपने कतव्य पर दृढ़ रहे। उपरान्त श्रीमान् वेद-संरक्षक राजासाहब मुनशी माधवलालजी सी. एस. आई. महोदय के आश्रय से पू० शास्त्रीजाने चातुर्मास्य यज्ञ किया। पू० शास्त्रीजी की ६१ वर्ष की अवस्था में भूतपूर्व बींजोलियाँ महाराज श्रीमान् राव सवाई कृष्णसिंहजी की दोनों धर्मपत्नी महोदया ने श्रीगोपाल जीकी स्थापना, तडागोत्सर्ग, तथा छत्रियों की प्रतिष्ठा निमित्त आग्रहपूर्वक निमन्त्रण किया। भूतपूर्व महाराज के अभाव में बीजो-लियाँ जाना पू० शास्त्रीजी को दुःखकारक प्रतीत होता था परन्तु उक्त दोनों महोदयाओं के अत्यन्त आग्रह से जाना पड़ा। पू० शास्त्रीजी कुटुम्ब के साथ तथा अग्निहोत्र के साथ तथा काशीस्थ एक उत्तम कर्मकाण्डीजी के साथ बीजोलियाँ गये। उस समय राज्यासन पर श्रीमान् राव सवाई पृथ्वीसिंहजी बिराजते थे। महाराज गुणों के सागर धर्म के स्तंभ दयालु विद्वद्भक्त और दानी पुरुष थे। उन्होंने बहुत सन्मानपूर्वक पू० शास्त्रीजी का स्वागत किया। और इसतरह प्रतिष्ठापूर्वक रखा कि इनको भूतपूर्व महाराज का अभाव प्रतीत होने न दिया। पू० शास्त्रीजी ने अपने साथ के कर्मकाण्डीजी द्वारा तथा उस नगर के पुरो-हितजी तथा ज्योतिषीजी द्वारा वह सब कार्य उत्तमोत्तम कराया। भूतपूर्व महाराज के दोनों धर्मपत्नी महोदया ने बहुत सत्कार-पूर्वक वस्त्र दक्षिणादि से पू० शास्त्रीजी को संतुष्ट किया। उनमें जो ज्येष्ठपत्नी महोदया थीं जिन्होंने प्राचीन कालमें पू० शास्त्रीजी से विद्याध्ययन किया था उन्होंने इस प्रतिष्ठा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

निमित्त उस समय पू० शास्त्रीजी को उत्तम पीवल जमीन १० बीघा दान दिया। उन्होंने यह बड़े महत्व का कार्य किया। श्रीमान् महाराज साहब राव सवाई पृथ्वीसिंहजी ने भी पू० शास्त्रीजी को उत्तम वस्त्र दक्षिणादि से संमानित किया। उपरान्त पू० शास्त्रीजी ने महाराजसाहब तथा उक्त दोनों महोदयाओं की आज्ञा प्राप्त कर वहां से प्रस्थान किया। तब उनकी इच्छा हुई कि श्रीनाथजी तथा एकलिङ्गजी का दर्शन करें और उदयपुर जाकर श्रीमान् महाराणाजी साहब का भी दर्शन करके फिर काशीजी जावें। ऐसा निश्चय करके प्रथमतः सकुटुम्ब अग्निहोत्रादि के साथ उदयपुर राजधानीमें पहुंचे। वहां पर मुखियाजी नवल रामजी के पुत्र राधावल्लभजी के मकान पर निवास कर अग्निहोत्र होम इष्टि आदि करते रहे। उन्होंने कुछ दिन उदयपुरमें ही निवास किया। एक दिन श्रीमान् महाराणाजी साहब ने बहुत संमान पूर्वक अपने दर्बार में पू० शास्त्रीजी को बुलाया। और उनके साथ बहुत प्रेमपूर्वक वार्तालाप किया। और उत्तम वस्त्र तथा दक्षिणादि से उनका बहुत संमान किया। वहां से पू० शास्त्रीजी की इच्छा श्रीएकलिङ्ग जी तथा श्रीश्रीनाथजी के दर्शन करने की थी। तदनुसार उन्होंने अपना निश्चय पक्का भी किया और जाने की तयारी ही में थे कि उस समय काशीजी से एक आनन्ददायक समाचार आया कि आपके यहां "पौत्रजन्म" हुआ है शीघ्र आइए। पू० शास्त्रीजी ने ६२ वर्ष की अवस्था में यह आनन्दसमाचार सुनकर मन से पूर्वोक्त देवताओं के दर्शन कर प्रणाम करके सकुटुम्ब अग्निहोत्रादि समेत काशीजी के लिये अपना प्रस्थान किया। काशीजी आकर वे अपनी आप्तमण्डली के साथ आनन्दोत्सव में शामिल हुए। पू० शास्त्रीजी को मन्त्रशास्त्र की भी पूर्ण रुचि थी। इसलिये उन्होंने उस समय उस शास्त्र के अनेक गूढ़ ग्रन्थों का तात्पर्य स्पष्ट किया। तथा मन्त्रशास्त्र के पूर्णाभिषेकपद्धति अन्त्येष्टिपद्धति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्राद्धविधि पंचदशमालाक्षरगणना लघु तथा महा षोढान्यास अष्टाङ्गविधि पुरश्चरणविधि पराध्यान मुद्रोद्धार मुख्य चतुष्टय-पारायण प्रयोग इत्यादि अनेक गूढ़ २ ग्रन्थ निर्माण भी किये। पू० शास्त्रीजी अपनी ६३ वर्ष की अवस्था में श्रीमान् वेदसंरक्षक राजासाहब मुनशी माधवलालजी सी. एस. आई महोदय के साथ गुजरात प्रान्त में गए। उस देश में राजा साहब के साथ पू० शास्त्रीजी का भी बहुत संमान हुआ। उसी यात्रामें पू० शास्त्रीजी द्वारकाधाम दर्शनार्थ गए। इन्होंने श्रीद्वारकानाथ तथा डाकोरनाथ प्रभृति उस प्रान्त के देवताओं का पुण्य दर्शन कर मार्ग में बड़ौदा नगरमें विश्राम किया। वहां पर पू० शास्त्रीजी को श्रीमान् गायकवाड सरकार बहादुर ने अपने दर्बारमें बुलाया। और वार्तालाप कर यथोचित वस्त्रदक्षिणादि से इनका संमान भी किया। इस प्रकार उस प्रान्त में पू० शास्त्रीजी को अनेक श्रीमान् तथा राजा महाराजाओं के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सबस्थानों में इनकी उत्तमोत्तमप्रतिष्ठा तथा बिदागी हुई। उपरान्त काशीजी आकर सुखपूर्वक अग्निहोत्रादि कर्म करते हुए तथा पुत्र पौत्रादि कुटुम्ब सुखोपभोग करते हुए रहने लगे। उस समय पू० शास्त्रीजी ने 'जैमिनिसूत्र' नामक ज्योतिषग्रन्थ के दो अध्यायों पर अपूर्व टीका लिखकर सटीक ग्रन्थ प्रकाशित भी किया। वह टीका देखने योग्य है। बहुत समय से पू० शास्त्रीजी की सह-धर्मिणी रुग्णावस्था में थीं उस समय पतिपुत्रपौत्रादि कुटुम्ब सुखोपभोग पूर्णतया करतीं हुईं अपने सौभाग्य के साथ काल के माहात्म्य से इस असार संसार से बिदा हुईं। शास्त्रीय नियमानुसार पू० शास्त्रीजी का अग्निहोत्र भी उस समय समाप्त हुआ। पू० शास्त्रीजी को धर्मपत्नी के वियोग का दुःख अग्निहोत्र नष्ट होने के कारण अत्यन्त हुआ। किसी प्रकार उन्होंने अपने चित्त को स्वस्थ करके अपना अन्तःकरण ईश्वरस्मरण में लगाकर उस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

समय अपना स्नानसन्ध्यादि अनुष्ठान विशिष्ट रूप से शुरू किया। और वेदान्त में निमग्न होकर क्रम २ से विषय वासनाओं को दूर करने लगे। कुछ दिनों के बाद पू० शास्त्रीजी के प्रकृति की अस्व-स्थता शुरू हुई। तब उन्होंने घर में बालकों से कह दिया कि अब अपना २ कार्य सँभाल लेना। मुझसे कोई विषय का प्रयोजन मत रखना। अब हमारे दिन अच्छे नहीं हैं इत्यादि कहा। कुछ समय के उपरान्त पू० शास्त्रीजी को ६४ वाँ वर्ष लगा ऐसे समय पूर्व परिचित अजमेर नगर के सेठजी श्री सिरहमलजी के पुत्र श्रीबिरद-मलजी के यहां कन्या विवाहोत्सव प्राप्त था। तथा पू० शास्त्रीजी के प्रियमित्र मथुरानिवासी श्रीनंदलालजी के पुत्र का यज्ञोपवीत दतिया राजधानी में था। दोनों महोदयोंने पू० शास्त्रीजी को अपने कार्य में उपस्थित होकर कार्य की शोभा बढ़ाने के लिये आग्रह पूर्वक निमन्त्रण किया। पूर्व में पू० शास्त्रीजी का निश्चय था कि अब काशीवास ही करें परन्तु 'दैवी विचित्रा गतिः' इस न्यायसे उनके अन्तःकरण में आया कि पूर्व में दतिया जाकर वहां का कार्य कराकर अजमेर श्रीसेठजी के यहां के विवाह में जाना और अजमेर में उत्तमतया औषधसेवन से अपनी आरोग्यता प्राप्तकर फिर वहां से पुष्करक्षेत्र में जाकर कुछ दिन निवास कर वहां अनुष्ठान करके काशीजी लौट आना। अनन्तर काशी निवास करना। ऐसा पूर्ण निश्चय करके एक उत्तम कर्मकाण्डीजी को साथमें लेकर दतिया राजधानी को रवाना हुए। पू० शास्त्रीजी की प्रकृति तो अस्वस्थ ही थी परन्तु उत्साह स्वस्थ था। दतियाराजधानी में प्रियमित्र श्रीनंदलालजी के यहां पहुंच कर कर्मकाण्डीजी द्वारा उनके पुत्र का यज्ञोपवीत कर्म उत्तमतया कराकर कर्मकाण्डीजी को वस्त्र दक्षिणादि से सन्तुष्ट कराकर काशीजी रवाना कर दिया। और आप वहां पर ही ठहरे। उन दिनों में पू० शास्त्रीजी का पुत्र मैं अपने आश्रयदाता श्रीमान्

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वेदसंरक्षक राजासाहब मुनशी माधवलालजी सी. एस. आई. महोदय के एक विशिष्ट अनुष्ठान में फँसा था। अतएव पू० पिताजी के साथ परदेश में जाने की इच्छा रहने पर भी मैं जा नहीं सका था। अनुष्ठान समाप्ति के लिये थोड़े ही दिन बाकी थे। वह समाप्त होने पर पू० पिताजी की सेवा में उपस्थित होने का मेरा निश्चय ही था। उपरान्त कुछ दिनों में अनुष्ठान समाप्त हुआ। उस समय पू० पिताजी ने भी पत्र भेजकर मुझे आने के लिये लिखा। तब मैंने अपने साथ में काशीनिवासी अपने स्नेही श्रीगिरिधरलालजी अवदीच को लेकर बहुत शीघ्रता के साथ काशी से प्रस्थान किया। और हम दोनों पू० पिताजी की सेवा में दतिया राजधानी पहुंचे। एक दो दिन वहां ठहर कर वहां से कुछ दूर पर श्रीसूर्यनारायण का एक पवित्र स्थान है वहां दर्शन के लिये पू० पिताजी के साथ हम दोनों गए। बैल-गाड़ी की सवारी द्वारा वहां पहुंच कर श्रीसूर्यनारायण का दर्शन कर दतिया आए। उपरान्त अजमेर चलने के लिये पू० पिताजी ने आज्ञा की। तब मैंने पू० पिताजी की सेवा में प्रार्थना की कि अब आपका शरीर प्रतिदिन अस्वस्थ मालुम होता है। इसलिये अब अजमेर न जाकर काशीजी ही क्यों न चलाजाय? उस पर उन्होंने उत्तर दिया कि मैं अपने उद्देशानुसार अजमेर जाकर श्रीसेठजी के यहां के विवाह में शामिल होकर वहां आरोग्यता प्राप्त कर श्रीपुष्कर क्षेत्र में कुछ दिन निवास कर अनुष्ठान करके फिर काशीवास करूंगा। अब इस समय मैं सोचता हूं कि पू०पिताजी ने मुझे जो उत्तर दिया वह बहुत ठीक ही दिया था। परन्तु मैं अपनी अज्ञता के कारण उनके गूढ अभिप्राय को समझ नहीं सका अस्तु। दतिया राजधानी से बिदा हुए उस समय श्रीमान् नंद-लालजी ने पू० पिताजी का वस्त्र दक्षिणा आदिसे उत्तम सत्कार, किया। वहां से रवाना होकर हमलोग अजमेर गए। वहां

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पर श्रीमान् सेठजी के यहां विवाहोत्सव में भी उपस्थित रहे। पू० पिताजी की प्रकृति प्रतिदिन अशक्त ही होती थी। श्रीमान् सेठजी के तरफ से ओषधि उपचार आदि की व्यवस्था उत्तमोत्तम थी विवाहोत्सव आनन्दपूर्वक संपूर्ण होने पर मैंने पू० पिताजी से फिर काशीजी चलने के लिये प्रार्थना की। तब पू० पिताजी ने मुझपर क्रुद्ध होकर कहा कि मेरे उद्देश्य में क्यों बाधा डालते हो मैं तुम्हारा एक भी न सुनूंगा। तब मैंने भवितव्यता प्रबल समझकर फिर काशीजी चलने का नाम भी न निकाला। दिनदिन उनकी शरीरप्रकृति क्षीण ही होती थी औषधि उपचार उत्तमोत्तम ही होता था। किसीप्रकार की त्रुटि नहीं थी। ऐसे समय भी एक मनुष्य शास्त्रीय विषय पर पू० पिताजी के साथ वार्तालाप करता हुआ सहसा वाद पर उपस्थित होगया। पू० पिताजी को वादी कहां सहन होसकता था। उनकी प्रकृति का धर्म हो ऐसा था। ३ घंटा तक शास्त्रार्थ करके उसको पराजित किया। यह बात पू० पिताजी के ब्रह्मलोक प्रयाण के पूर्वदिवस की है। इस प्रकार उत्साही पुरुष थे। दूसरे दिन प्रकृति की विशेष अस्वस्थता देखकर हमलोगों ने पू० पिताजी को पुष्कर क्षेत्र में लेजाकर उत्तम स्थान में रखा। कुछ समय के बाद पू० पिताजी ने प्राणों का संयमन करके व्यापाराभाव पूर्वक स्तब्धता धारण की। तब हमलोगों ने विशिष्ट औषधि देना चाहा इसपर पू० पिताजी ने धीरे २ कहा कि "अब मुझे ओषधि मत दो मुझे अपना कर्तव्य करने दो" बस! पूज्य पिताजी का यही अन्तिम वाक्य हैं। तब मुझे धैर्य नहीं रहा चित्त व्याकुल होकर मेरे नेत्रों से अश्रुधारा का प्रवाह शुरू हुआ। तथापि मैंने धैर्यावलम्बन कर चित्त को स्वस्थ करके कुशासन तथा ऊर्णासन बिछाकर उसपर भींत के सहारे पू० पिताजी को बैठाय दिया और मैं तथा श्रीगिरधरलालजी अवदीच्य दोनों मनुष्य पास ही में सेवा के लिये तत्पर रहे। थोड़े हीसमय में

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ध्यानस्थ होते हुए संवत् १९६९ ज्येष्ठ शुक्ल ८ शुक्रवार के रात्री को नवमी तिथि में श्रीगङ्गादशहरा के पुण्यदिनों में श्रीपुष्करक्षेत्र में पू० पिताजी ने इस नश्वर देह को त्याग कर अखण्ड ब्रह्मलोक में अपना वास किया। हा !!! तब मैं निराधार हुआ मेरे लिये जगत शून्य समान हुआ। मुझपर सहसा वज्रपात हुआ। मैं क्या करूं कहां जाऊं इत्यादि चिन्तापरंपरा से मैं व्याकुल होगया। श्री गिरधरलालजी अवदीच ने मुझे बहुत धैर्य दिलाया। और मेरी पूर्ण सहायता की। इनके मेरे ऊपर वे उपकार असंख्य हैं। अन्त में सृष्टिक्रम के अनुसार यही गति निश्चित है ऐसा सोचकर मैंने चित्त को स्थिर किया और पू० पिताजी का उत्तरकृत्य यथाविधि किया। अनन्तर ३ दिन वहां निवास कर पू० पिताजी के रुद्रभाग को वहां से साथ में लेकर श्रीकाशीजी आकर श्रीगङ्गाजल में प्रक्षेप कर मैंने पू० पिताजी का पारलौकिक कृत्य यथाविधि यथाशक्ति समाप्त किया।

पू० पिताजी को ६ कन्या और ४ पुत्र ऐसे १० सन्तान हुए। जिनमें मैं और मेरा अनुज ऐसे दो ही सन्तान विद्यमान हैं। जिसमें मेरे तरफ ज्येष्ठत्व होने से मेरे हाथों से पू० पिताजी तथा पू० माताजी की कुछ सेवा हुई। श्री पूज्य पितृमातृवियोग दुःख तो इस शरीर के साथ निरन्तर ही रहनेवाला है। परन्तु सृष्टि क्रम के अनुसार यह क्रममार्ग ही हुआ। ऐसा सोचकर धैर्य धारण कर किसी तरह अपना कर्तव्य कर्म करना है। अस्तु आज उन्हीं के पुण्यतथ आशीर्वाद के प्रताप ही से हमलोग सकुटुम्ब पुत्रवान् होकर सर्व सुख से अत्यन्त सुखी हैं। इसी प्रकार उत्तरोत्तर हमलोग पुत्र पौत्रधनधान्यादि सर्वसुख से सुखी होकर इस संसार में निर्मल कीर्ति लाभ के भागी होवें यही श्रीमान् सर्वाधार जगदीश्वर के चरण कमलों में प्रार्थना है॥

॥ इति शुभम् ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

॥ श्रीः ॥

कै० पू० श्री ६ विनायक शास्त्रीजी वेताल की जन्मपत्रिका

॥ श्रीसंवत् ॥ १९०६ ॥ शके ॥ १७७१ ॥ जैवमानेन दुर्मति नाम संवत्सरे॥उत्तरायणे॥वसन्तऋतौ॥वैशाखमासे॥शुक्लपक्षे॥नवम्यां तिथौ ॥भौमवासरे ॥ घ० ॥ १० ॥ प० ॥ ४२ ॥ ततोदशम्याम् ॥ मघानक्षत्रे ॥ घ. ॥ ३८ ॥ प. ॥ २ ॥ वृद्धियोगे ॥ घ. ॥ १२ ॥ प. ॥ ८ ॥ ततो ध्रुवयोगे ॥ तात्कालिके तैतिल करणे ॥ श्रीसूर्योदयादिष्टम् ॥ घ. ॥२७॥ प. ॥१५॥ वि. ॥ ३० ॥ तत्समये श्रीमतां श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानतत्पराणां वेतालोपनामकश्रीगदाधरभट्टसुतश्रीबालकृष्णभट्टशर्मणां गृहे पुत्ररत्नमजीजनत् ॥ सू. ॥ ० ॥ १९ ॥ १३ ॥ ३१ ॥ ल. ॥ ५ ॥ २१ ॥ ४३ ॥ १४ ॥

॥ जन्मकुण्डलीचक्रम् ॥

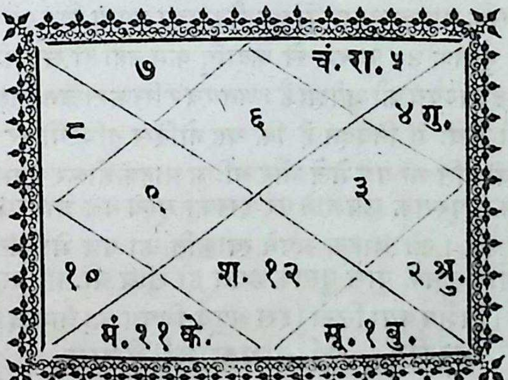

॥ शुभम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सूचना.

*अढ़ाई सौ ग्राहक होने पर "ताजिक नीलकण्ठी" छपेगी *।
दो तन्त्र का अग्रिम मूल्य १॥) डा० म० अलग ।

सब लोग जानते ही हैं कि वर्षफल कहने के लिये समस्त संसार में यही प्रचलित है। इसकी नवीन संस्कृत टीका और नवीन उदाहरण तथा मार्मिक उपपत्ति स्थान २ में लिखी गई है। और इसमें षोडशयोगों का वास्तवअर्थ अपूर्व लिखा गया है। नीलकण्ठी का मूलपाठ जो स्थान २ में नष्ट होगया है वह भी शुद्ध किया गया है। और विशेषविधि लिखे गए हैं। स्थान २ पर गणित के सुगम होने के लिये सारणियां भी लिखी गई हैं। विंशोत्तरी अष्टोत्तरी योगिनी दशा अन्तर्दशा विदशाआदि के नवीन आनयन प्रकार सुगम तथा सोपपत्तिक लिखे गए हैं। वर्षेशादि निर्णयस्थलों में योग्य शास्त्रार्थ भी लिखा गया है। विशेष लिखना व्यर्थ है। सारांश नीलकण्ठी में जिन २ विषयों की अपेक्षा है वे सभी विषय ग्रन्थान्तरों से तथा नवीन कल्पनाओं से संग्रह किये गए हैं। ऐसी अमूल्य रत्न के समान पुस्तक कै० पू० श्री ६ विनायकशास्त्रीजी ने बड़े ही परिश्रम से तैयार कर रखी है। अब रसिक ग्राहक महाशयों पर ही इसका छपना निर्भर है। कारण कि यह पुस्तक ४० फारम से कदापि कम नहीं हो सकती। इसमें अधिक द्रव्यव्यय की अपेक्षा है। अतएव रसिक सज्जन ग्राहक महोदयों की सेवा में निवेदन है कि यह नोटिस दृष्टिगोचर होते ही अपने स्वीकृति का पत्र भेजें और अग्रिम ग्राहक होकर लाभ उठावें। आगे फिर पुस्तक छपजाने पर इसका मूल्य बढ़ जायगा अतएव शीघ्रता करें। जो ग्राहक अपने स्वीकृति का पत्र भेजकर अग्रिम ग्राहक होंगे उनके पास पुस्तक छपते ही शीघ्र वी.पी. द्वारा भेजी जायगी। विशेष क्या लिखें। इस अपूर्व विषय का आनन्द लूटिये।

भवदीय— श्रीनाथशास्त्री वेताल,

महल्ला दुर्गाघाट–बनारस सिटी।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

विज्ञापन.

स्वधर्मधुरन्धर दैवज्ञवाचस्पति-ज्योतिष्पारदृश्वा कै० पू० श्री ६ विनायकशास्त्रीजी वेताल महोदय ने बनाई हुई और छपाई हुई पुस्तकें बिक्री के लिये तयार हैं। मूल्य

१ जैमिनिसूत्र-सटीक, ज्योतिष, अध्याय प्रथम द्वितीय		।)
२ लघुपाराशरी-सटीक और भाषा भावार्थ सहित		≈)
३ पञ्चाङ्गपाटीसंग्रह	भाषा टीका सहित	-)
४ एकादशीनिर्णय	भाषा टीका सहित	-)
५ ईशावास्योपनिषद्	भाषा टीका सहित	-)
६ वारकुञ्चिका ...	उदाहरणसहित केवल भाषा में	-)
७ शिक्षापत्रीध्वान्तभास्कर ...	केवल भाषा में	-)
८ अधिकमास निर्णय	संस्कृत तथा भाषामें	-)

डाँक महसूल अलग होगा।

❋ अमूल्योपहार ❋

पिकाभ्यर्थन	संस्कृत	पं० नारायणशास्त्री खिस्ते कृत
पिकप्रतिवचन	„	पं० जगन्नाथशास्त्री होशिङ्ग कृत
पिकोत्तर	„	पं० अनन्तरामशास्त्री वेताल कृत
पिकोक्ति...विमर्श	„	पं० श्रीनाथशास्त्री वेताल कृत
उदयान्वयवर्णन	„	„ „ „
पू० श्री ६ विनायक शास्त्रीजी वेताल का जीवनचरित्र हिन्दी		„ „

इन पुस्तकों के लिये डाँक महसूल भेजना...

पता—श्रीनाथ शास्त्री ...

दुर्गाघाट, बनारस ...

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand